पूज्य ज्ञान दिवाकर शासनरत्न गुरुदेव श्रीमान् श्री जिन कवीन्द्र सागर सूरीश्वर के स्मरणार्थ

ॐ अर्हं नमोनमः

॥ तपो विधि द्वितीय भाग ॥

*

खरतर गच्छगगनमार्तण्ड पूज्य स्वर्गीय गणाधीश श्रीमान् सुख
सागरजी म० सा० के वर्तमान पट्टधर विद्वद्वर्य शास्त्रमूर्ति
श्री गणनायक हेमेन्द्रसागरजी म० सा० की आज्ञा
नुवर्तिनी पू० गु० प्र० स्वर्गीया श्रीमती लक्ष्मी
श्री जी म० सा० की विदुषी शिष्यारत्न स्व
श्रीमती शिवश्रीजी म० सा० की पू० विदुषी
शिष्या प्र० श्रीमती बाल्यब्रह्मचारिणी
प्रमोदश्रीजी म० की शिष्या प्रकाश
श्रीजी म० के सदुपदेश से

प्रकाशक—

❋ श्री विमलप्रमोद-ज्ञान मन्दिर ❋

मु० फलवर्द्धिका (फलोदी) राजस्थान

द्रव्य सहायक-भक्त तथा भक्ता मण्डल

वीर सं० २४८८
वि० सं० २०१९
आषाढ शुक्ला पूर्णिमा
} मूल्य पठन पाठन {
द्वितीयावृत्ति
१०

ॐ नम

द्रव्य सहायक महानुभावों की नामावली

१००) रु० शे माणकचन्दजी लक्ष्मीचन्दजी बोरा, मु० सिंधनूर
५५) रु० „ शिवराजजी शान्तिलालजी साड, „ गैरवा
५१) रु० श्रीमती मूली बाइ मठिया, „ बीकानेर
२५) रु० „ पाली श्राविका समाज ने ज्ञान खाते से दिये „ पाली
२५) रु० शे० अनोपचन्दजी तातेड, „ जोधपुर
२०) रु० मदनराजजी भणशाली, „ जोधपुर
२०) रु० श्रीमती केशरबाइ गुलेच्छा „ फलोदी
१५) रु० „ फलोदी श्राविका ज्ञान खाते से, „ फलोदी
१५) रु० „ हमीरमलजी मोहनराजजी मुता, „ गैरवा
११) रु० श्रीमती रूपा बाइ गन्ढीया, „ पाली
१०) रु० „ मोड़ी बाई कोचर, „ फलोदी
१०) रु० „ प्रेमलता बाइ बोथरा, „ जोधपुर
१०) रु० शे० चम्पालालजी बच्छावत की पत्नी, „ फलोदी
६) रु० श्रीमती गुमान बाइ मुता, „ पाली
१५) रु० „ सूयकान्ता बाइ गुप्ता „ ब्यावर
८) रु० शे० सरदारमलजी की धर्मपत्नी, „ जोधपुर
७) रु० श्रीमती उगमना बाई लोढा, „ जोधपुर
५) रु० शे० जोगराजजी हमराजजी गुलेच्छा, „ नागपुर
५) रु० शे० प्रतापमलजी लूणावत, „ ससदड़ी
४) रु० श्रीमती देवी बाइ „ बालोतरा
४) रु० „ निर्मला बाइ मालू, „ फलोदी
४) रु० शे० दुलेराजजी भण्डारी की धर्मपत्नी, „ जोधपुर
२३४) रु० कुम्नर श्राविका मण्डल ज्ञान खातेसे,

नोट —एतदर्थ महाशय महानुभावों धन्यवाद के पात्र हैं,

किंचिद्वक्तव्य—

मान्य भ्रातृगण !

आज मैं आपके सामने यह 'तपो विधि द्वितीय भाग" पूज्येश्वर श्रीमान पुण्यपवित्र-ऋषि-कुलकिरीट विद्वद्रत्न गुरुदेव श्री मज्जिन कवीन्द्रसागरसूरीश्वरजी के स्मरणीय प्रकाशित करता हूँ।

इसमें वर्षीतप १ पाण्मासिकतप २ उपधानतप ३ विशतिस्थानकतप विधिविधान सहित साङ्गोपाङ्ग वर्णित करके हमारे पूज्यपाद परमपूज्येश्वर विद्वद्वर्य श्रीमान स्व० श्री मज्जिनहरिसागर सूरीश्वर साहब ने इसका निर्माण कर भव्यजनता का परम उपकार किया है।

अतः इस पुस्तक से आप लोग अमूल्य लाभ लेकर तप आराधन विधिविधान को सुलभ रीति से प्राप्त कर सकेंगे। यही विचार कर यह पुस्तक द्वितीय वृत्ति में प्रकाशित की जाती है।

भव्यजन इसमें अपना इष्ट साधन कर आत्म लाभ लें। तथा 'द्वितीय विभाग" में रोहिणीतप, चौदह पूर्वतप की विधि भी दिखलाई गई है। अन्य महर्षिगण की बनाई हुई इस विधि का भी लाभ लें।

एवम् इसमें साथ ही गायन रूप गुरुगुण कीर्तन भी दिया गया है।

यदि यन्त्रालय तथा लेख सम्बन्धी त्रुटि हो तो अवश्य उसे सुधार कर पढ़ें इति किमधिकम् सुज्ञेषु।

॥ शुभम्—भूयात् ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

भवदीय-शुभेच्छुक

वि० प्र० ज्ञा० म०

मु० फलौदी (राजस्थान)

:: समर्पण ::

ॐ ह्रीं

परम पूज्येश्वर–श्री गुरुदेव भगवन् ! मैं श्रीमान्

स्वनाम धन्य-प्रथम सिद्धान्तमहो तत्वज्ञानी

श्री मज्जिनरवीन्द्रसागरसूरीश्वर साहब के

कर कमलों में अनन्त उपकार को

स्मरण कर अनन्य भक्ति वश

यह पुस्तक सादर सविनय

श्रद्धाञ्जलि रूप में सम

र्पित करती हूँ

कृपया इसे

स्वीकारें।

●

इत्यलम्—भवदीय चरणोपासिका

आर्या–प्रकाश श्री

(स्वर्गीय-पूज्यश्वर)

प्रात स्मरणीय विद्वद्वर्य-श्री जिन

● कवीन्द्रसागरसूरीश्वर साहब ●



जन्म स १९६६ चत्र शुक्ला १३
दीक्षा सं १९७६ फाल्गुन कृष्णा ६
सूरी पद स २ १७ चत्र कृष्णा ७
स्वग स २०१८ फाल्गुन शुक्ला ५

॥ ॐ अर्हं नमः ॥

॥ श्रीसुखसागर-भगवज्जिनहरि पूज्यपरमगुरुभ्यो नमो नमः ॥

पूज्यपाद-पूज्येश्वर-प्रातः स्मरणीय-सुगृहीत नाम-धेय-सर्वतंत्र स्वतंत्र भानानानवचारि-श्रीसुविहित खरतरगच्छाधिराज श्रीश्री १००८ श्रीमज्जिनहरिसागर सूरीश्वर विरचित

वर्षीतप—

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति सग्रहः ।

चैत्यवन्दन—१ ।

(द्रुतविलम्बितम्)

१

विमल-बोध-विधान-विधायको,
युगल-जात-तमोपहरः प्रभुः ।
सकलभावविभासिसुधामवान्,
हरिजिनो जयताज्जयताच्चिरम् ॥

२

अतल-भीमभवोदधितारकं,
सकल-साधन-भावसुधारक ।
जटिल-मोह-महोदय-हारको,
हरिनतो जयताज्जयताचिरम् ॥

३

विपुल-वार्षिक-दिव्यतपोनिधौ,
तरलतारहितात्मविवेकवान् ।
अकल एक-युगादिजिनेश्वरो,
हरिनतो जयताज्जयताचिरम् ॥

चैत्यवन्दन—२ ।

(तोटक छन्द)

१

निज पूर्व किये सबकर्म महा
बलवान विरोधि-पराजय को ।
प्रभु आदि अचचल भावभरे,
तप वार्षिक हर्षित हो करते ॥

२

प्रभु का तप तेज अहो कितना,
निज को परको सुखदायक था ।

कृत कर्म कटे भवमर्म मिटे,
परमातमा-गुण भी प्रकटे ॥

३

धन भाग्य किये जिनने प्रभु के,
शुभ दर्शन दर्शन-पावन हो ।
सुखसागर वे भगवान बने,
हरिपूज्य हुए जय हो जय हो ॥

चैत्यवन्दन—३ ।

(हरिगीत छन्द)

१

श्रीसुखम दुखमा नाम आरा अन्तमें जो अवतरे,
भारत अकर्मक भावको हर कर्मपथ जो थिर करे ।
नर नारियों में पुण्यतम कर्तव्य बोधविधायक,
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमदृषभ जिननायकम् ॥

२

ससार के सब भोग मारी-रोग जैसे जान कर,
साम्राज्य को रजपुञ्ज जैसे तज धरें सयमप्रवर ।
जग जीवगण को आत्म जीवन ज्योति पावनदायक
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमदृषभजिननायकम् ॥

कृत दुष्कृतों को दूर करने के लिये उपशान्तिमय,
जो घोरतर तपजपं मर वर पागये अनुपम विजय
श्रीनाभिनृप मरुदेवीनन्दन कीर्तिगायन-लायक,
त नोमि हरिपूज्य पर श्रीमदषभ-जिननायकम् ॥

चैत्यवन्दन—४ ।

(शार्दूलविक्रीडितम्)

१

श्रीमन्नाभिकुलाम्बराम्बरमणिश्चिन्तामणिश्चिन्तिते,
र्थे योगीन्द्र किरीटनायकमणि कर्त्तव्यमार्गाग्रणीः
सन्दोर्धत्सुधामणिगुणगणी कल्याणभाग्रणी. ॥
श्र कुर्याद् हरिपूज्य-पुण्यपदभागादौ युगग्रामणीः ॥

२

भिक्षाविघ्नभिनभक्तजनतानीते महोपायने,
कन्या-रत्न-हयेभ वस्तुनिपये नित्य ह्युपेक्षापरः ।
दीक्षानन्तरमन्तरायनशतश्चक्रेतपो वार्षिक,
य सोऽय हरिपूज्य पुण्यपदगिः पायादपायात्प्रभुः ॥

३

जाति-स्मृत्युपलक्षिताय शिथिरत्नञ्येक्षुभूयोरस.,
श्रेयांसेन निहारितो भगवते भव्यात्मना भावतः ।

देवैं पञ्च-सुदिव्यदिव्यमहिमाऽऽगीति धन्ये क्षणे,
धन्यास्ते हरिपूज्यपुण्य महिता येऽत्रण फल लम्भिता ॥

चैत्यवन्दन—५ ।

दूहा—

ॐ अर्हं आदिप्रभु-युगआदिस्थितिसार ।
कर्म अनादि दूर कर-वंदू वार हजार ॥ १ ॥
निज जीवन आदर्श से जगजीवन उपकार ।
कर्ता है प्रभु आपको-वंदू वार हजार ॥ २ ॥
अन्तराय आश्रव शमी-सेवूं मैं हर वार ।
जीवन में पल्टा करो वंदू वार हजार ॥ ३ ॥
पूरब कृत निज कर्म को भोगें आप उदार ।
मेरा क्या औदात यम-वंदू वार हजार ॥ ४ ॥
वर्षीतप कर आपने किया कर्म संहार ।
वह फल मुझको दीजिये-वंदू वार हजार ॥ ५ ॥
सुखसागर भगवान है-आदीश्वर अवतार ।
शरणागत रक्षा करो वंदू वार हजार ॥ ६ ॥
हरि पूज्येश्वर आप हैं मेरे तो आधार ।
मनसा वचसा कर्मणा-वंदू वार हजार ॥ ७ ॥



स्तवन----१।

(तर्ज—तेरे पूजन को भगवान बना मनमंदिर आलीशान)

जय जय आदीश्वर भगवान
अगमगुणी ज्ञानी दया निधान ॥ टेर ॥

प्रभुने युगलाधर्म निवारा, करम युग पावन सूत्र प्रचारा।
पढ़ा जग भव्य कला विज्ञान, हुआ फिर जीवन का कल्याण॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ १ ॥

विनीता नगरी राज्यजमाया, भोगा पूरब पुण्य कमाया।
छोड़ा अरे अथिर सब जान, संयम साधा पुण्यप्रधान॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ २ ॥

जगत की जनता भक्त तमाम, करती सविनय भाव प्रणाम
न जाने भिक्षा विधि विधान, इसी में था संकेत महान्।
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ३ ॥

पूरव भव का था यह पाप, बैल मुख छींका बाधा आप
उसी से आना विघन निदान, सहा प्रभु क्षमावली बलवान
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ४ ॥

कन्या हय गय रथ मणिलावें, लोक प्रभु को भेंट चढ़ावें
पर प्रभु धरें न उन पर ध्यान, विधियुत चाहें भिक्षादान
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ५

बरस यों बीता बिन आहार, जय जय जिनवर जगदाधार ।
बने रह अचल सुमेर महान्, तभी तो पाये पूजा स्थान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ६ ॥

श्रीश्रेयांस कुमर अवलोके, जाती स्मरण भाव अशोके ।
प्रभु के उचित सुभिक्षा दान, जाना, होगया हर्षित प्रान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ७ ॥

प्रभु के अंतराय का योग, टूटा प्रकटा धन्य सुयोग ।
इक्षु रस वर अमृत पान, करायें श्रीश्रेयांस महान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ८ ॥

प्रकटे पंच दिव्य अभिराम, काटे प्रभुने कर्म तमाम ।
धन्य वह समय धन्य अवधान, बन जो पाये दर्शन दान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ९ ॥

पर्व यह अक्षा तीज शुभनाम, आराधक अक्षय गुणधाम ।
होते सुखसागर भगवान, वर्षीतप करके अनिदान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥१०॥

समाप्ति विधियुत तपको धार, भविजन भवजल करते पार ।
करें 'हरि' उनका नित गुणगान, जय जय आदीश्वर भगवान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥११॥



स्तवन--२ ।

(तर्ज--गोपीचन्द लड़का बादल घरमें रे कंचन महेल में)

आदीश्वर स्वामी नामी बल ऐसा हम को दीजिये ।
तप सफल करें हम वैसा बल कृपया हमको दीजिये ॥ टेर ॥
पूरव भव कृत अन्तराय को, वर्षीतप कर तोड़ा ।
हम भी वैसे ही तर पावें, अड़े न आड़ा रोड़ा रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ १ ॥
अंतराय से मन की इच्छा, मनमें नाथ समावे ।
कूप की छाया कूप समावे, कोई काम न आवे रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ २ ॥
हम अज्ञानी अंतराय के, आश्रव सारे सेवें ।
भवसागर मझधार नाथ हम, नाव दयाकर खेवें रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ३ ॥
हस हस बांधें कर्म अनेकों, नहीं विवेक धरावें ।
रोते रोते भोग रहे हम, किसको नाथ सुणावें रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ४ ॥
संयम शक्ति रही न हममें, कोरी बात बनावें ।
कागज की नैया पर बैठे, कैसे पार लगावें रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ५ ॥

ऐव दूसरों के हम देखें, अपना करें न लेखा।
दूगर चलता देख रहे पर, पग चलता नहीं देखा रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ६ ॥

धन्य धन्य प्रभु धन्य आपने, अपना रूप निपाया।
परमातम पद को प्रकट कर, परमानद पढाया रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ७ ॥

नाभि नृप मरुदेवा नदन, जय जय हे अविकारी।
वर्षीतप कर कर्म खपाये जावें हम बलिहारी रे ॥
आदीश्वर स्वामी ० ॥ ८ ॥

धन हथिणाउर पावन भूमि, धन श्रेयास कुमार।
धन इक्षुरस पान किया प्रभु, धन दिन पर्व उदारा रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ९ ॥

चैतवदी आठम से लेकर, सुद वैसाखी तीजे।
वर्षाधिक तप किया पारणा, शान्त सुधारस भींजे रे।
आदीश्वर स्वामी० ॥१०॥

सुखसागर भगवान तुम्ही हो, प्रभु हरिपूज्य हमारे।
जीवनमें बल बुद्धि भरदो, गावें जय जय कारे रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥११॥

स्तवन----३ ।

(तर्ज--शुद्ध सुन्दर अति मनोहर बोल वंदे मातर)

आदि जिनवरजी अनादि, कर्ममल हर लीजिये ।
दास हूं अरदास मेरी, ध्यान में धर लीजिये ॥ टेर ॥
तीसरा आरा प्रभु वह था, अकर्मक मान में ।
कर्मयुग तब था दिखाया, अब भी दिखला दीजिये । आ०॥१॥
आपने नर नारियों को, मोक्ष की दी थी कला ।
नाथ अब वैसी कला का, दान दयया कीजिये । आ० ॥२॥
राजनीति धर्मनीति, के प्रवर्तक आप हैं ।
है अनीति छा रही वस दूर उसको कीजिये । आ० ॥३॥
राज को रजपुंज माना भोग माने रोग से ।
त्याग का वह पाठ पावन, नाथ सिखला दीजिये । आ० ॥४॥
वर्षभर रहकर निराहारी, करम तोड़े प्रभु ! ।
वह सफल तप कर सकू, वह शक्ति प्रभु दे दीजिये । आ०॥५॥
हाथि हय कन्या रतन मणि के, प्रलोभन आपको ।
थे चला न सके अचलता, नाथ मुझको दीजिये । आ०॥६॥
भक्त वर श्रेयांस से ले, इक्षुरस पारन किया ।
वैसी भक्ति कर सकूं, वैसा समय प्रभु दीजिये । आ०॥७॥
की तपस्या में क्षमा थी आपने अनुपम प्रभु ! ।
उस क्षमा की साधना को आज सिखला दीजिये । आ०॥८॥
ज्ञान केवल आपने पाया स्वमाता को दिया ।

शुद्ध उनके अशरा कुछ दान दाता कीजिये । आ० ॥९॥
आप सुरसागर प्रभु भगवान हैं संसार म ।
नाथ निज पद भक्ति के अधिकार को कुछ दीजिये ।आ०॥१०॥
हे प्रभो हरिपूज्य गुण गाया करू नित आपका ।
बुद्धिबल वह दीजिये इस विनति को सुन लीजिये ।आ०॥११॥

स्तवन---- ४ ।

(तर्ज—तुम को लाखों प्रणाम)

आदीश्वर अवतारी तुम को लाखों प्रणाम ।
ऋषभ प्रभु उपकारी तुम को लाखों प्रणाम ॥ टेर ॥
नाभि नृप मरुदेवी नंदा, इक्ष्वाकु कुल कमल दिणंदा ।
युगलाधर्म निवारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १ ॥
कोशल देश विनीता पावन, जनता मे डाला नव जीवन ।
आदि युग उपकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ २ ॥
चौसठ बहुतर कला सिखाई, सुखमय जीवन रीति दिखाई ।
पुण्य कला बलिहारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ३ ॥
बीस लाख पूरव तक स्वामी, रहे कुमार पदे अभिरामी ।
धन जीवन अधिकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ४ ॥
तेसठ लाख पूरवतक राना, रहे जगत के प्रभु सिरताना ।
राज नीति विस्तारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ५ ॥

भरतादिक सौ सुत बडवीरा, गुण म सागर सम गंभीरा ।
तद्भव शिव सचारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ६ ॥
ब्राह्मी सुन्दरी सुता सती थी, शील महाव्रत पुण्यवती थी ।
नाम लियां निस्तारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ७ ॥
अनासक्त भोगी प्रभु योगी, सयम धारें नृप सहयोगी ।
साधु चार हजारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ८ ॥
पूर्व जन्म कृत कर्म प्रभावे, समुचित भिक्षा वस्तु अभावे ।
वर्षाधिक निराहारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ९ ॥
क्रिया निरतर सुव्रत साधन, प्रभु अनत बल धारी घन घन ।
परम क्षमा नितधारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥१०॥
श्रीश्रेयास कुवर पुण्योदय, अक्षातीज इक्षुरस सुखमय ।
व्रत पारण निर्द्धारी तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥११॥
एक लाख पूरव सयम धर, उत्तरोत्तर गुणठाना पदवर ।
हुए मुक्ति अधिकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥१२॥
स्वामी शरणागत हू तारो, सफल तपोबल बुद्धि निवारो ।
हरिपूजित पद धारी तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥१३॥

स्तवन—५ ।

(तर्ज —बीनासर स्वामी अतरजामी तारो पारसनाथ-साद)

आदीश्वर स्वामी त्रिभुवन नामी अभिरामी अवतार ।
पचम गतिगामी निजगुणधामी आरामी अविकार रे ॥ टेर ॥

हे प्रभु कर्म से पीड़ित हूं मैं कर्म बड़े विकराल।
आप अकर्मक भाव के नायक, मेरी करो प्रतिपाल रे आ०॥१॥
घाती अघाती चार चार हैं, है उनका विस्तार।
आतम के गुण आठ उन्हीं पर ये करते अधिकार रे आ० ॥२॥
मिथ्यात्वादिक हेतु सहित जो किरिया होती राम।
उससे आतम पड़ता पुद्गल, रूपी कर्म के पास रे आ० ॥ ३ ॥
शुभ किरिया है पुण्य का कारण, वचन वहि समान।
पाप अशुभ है लोह की बेड़ी दुस्सह दुःख निदान रे आ०॥४॥
जीव अनादि कर्म अनादि, उभय अनादि संयोग।
कनकोपल में पावक जैसे, स्वामी भाखो नियोग रे आ० ॥५॥
प्रभु गुण जैसे मुझमें भी है, सत्तागत गुण आठ।
व्यक्त करो कृपया प्रभु मेरे, जैसे हुताशन काठ रे आ० ॥ ६ ॥
निधत्त घनाघन कर्म बली को, वर्षाधिक तप धार।
आतम ध्यान सुपावन करके, आप किया परिहार रे आ० ॥७॥
बंध उदय उदीरणा सत्ता गत मम कर्म अनेक।
उसपर विजय करूं मैं कैसे? बह दो नाथ विवेक रे आ०॥८॥
गुण ठाणों की महिमा भारी, फरमाई जगनाथ।
उत्तरोत्तर मैं भी चढ़ पाऊं, जो पकड़ो मुझ हाथ रे आ ०॥६॥
कर्म प्रवर्तक हो कर स्वामी हुए अकर्मक आप।
यह तप त्याग तपोबल शुद्धि देदो हूं मा बाप रे आ०॥१०॥
सुखसागर भगवान परमहरि पूज्य दया कर देव।
पाउ अकर्मक तुम पद दर्शन तो नित साधु सेव रे आ०॥११॥

स्तवन—६ ।

(तर्ज—अवधू सो जोगीगुरु मेरा—आशावरी)

बाबा ऋषभ जिनद तप धारें ।
कर्म कलङ्क निवारें रे बाबा० ॥ टेर ॥

राज तना सुख साज तना निज आतम के उपयोगी ।
ग्राम नगर पुर विचरे स्वामी, सयम सुख के भोगी रे बा०॥१॥
भिक्षाविधि नहीं लोक पिछाने, प्रभु कर्मोदय जानें ।
मौन सहित वर्षाधिक तप को, परम क्षमा सह ठानें रे बा०॥२॥
भक्ति सहित नरनारी प्रभु के अर्पण हित नित लावें ।
कन्या हय गय रथ रतनों को, नाथ नजर नहीं ठावें रे बा०॥३॥
श्रीश्रेयांस कुंवर पुण्योदय जाती समरण पावे ।
जिन दर्शन भिक्षा विधि जाने इक्षुरस वहिरावे रे बा० ॥ ४ ॥
धन दाता धन पात्र प्रभुजी धन दिन तीज सुहावे ।
पंच दिव्य प्रकटे नित जय जय सुर गणपति हरि गावें बा०।५॥

स्तवन—७ ।

(तर्ज—तेरा सो हो चुका हूं चाहे तारो या न तारो—कव्वाली)

आदीश देव प्यारे विनती करु विचारो ।
निज दास जान करके मेरी दशा सुधारो ॥ टेर॥

स्वामी कहे बिना ही, सब आप जानते हैं।
ज्ञानी प्रभो दयालु, अज्ञान को निवारो आ० ॥१॥
फैला प्रमाद भारी, कर्मों का नाथ मुझ पर।
गुमराह हो रहा हूं अयदेव! बस उबारो आ०॥२॥
तप वर्ष भर किया था, हा आप तो बली हैं।
बल हीन दीन मुझ में, बल बुद्धि को प्रचारो आ०॥३॥
पर पौत्र आपका था श्रेयास भाग्यशाली।
अति भक्ति कर मजा था मैं क्या करुं उबारो आ०॥४॥
सुखसिन्धु नाथ भगवन् हरिपूज्य नाव मेरी।
मझधार में पड़ी है, करके दया उबारो आ०॥ ५ ॥

— —

स्तवन—८।

(तर्ज—मैं तो दिवाना प्रभु तेरे लिये)

प्रभु हाजिर खड़े हम तेरे लिये।
तेरे लिये हां तेरे लिये प्र० ॥ टेर ॥
नाभि नृप मरुदेवी के नंदन।
वंदन करें हम तेरे लिये प्र० ॥ १ ॥
हाथी को लावें घोड़ों को लावें।
रथ को मगावें प्रभु तेरे लिये प्र०॥ २ ॥

कन्या को लावें व्याह रचावें ।
म्हेल तैयार करें तेरे लिये प्र० ॥ ३ ॥
रत्नों को लावें मणियों को लावें ।
कचन का ढेर करें हम तेरे लिये प्र०॥ ४ ॥
शाल दुशाले वस्तर अनोखे ।
अर्पण करें हम तेरे लिये प्र० ॥ ५ ॥
यह दुःख हम से देखा न जावे ।
दुखिये हैं हम प्रभु तेरे लिये प्र० ॥६॥
संसार छोडा संयम को धारा ।
मौनी हुए प्रभु किसके लिये प्र० ॥ ७ ॥
वर्षीतप को धारे प्रभु जी ।
कर्म कलङ्क हरने क लिये प्र० ॥ ८ ॥
श्रेयांस आया इक्षुरस लाया ।
यह तो उचित था तेरे लिये प्र० ॥ ९ ॥
भक्तों ने नाना तत्र से प्रभुजी ।
आहार दना तेरे लिये प्र० ॥१०॥
पंच दिव्य तब प्रकटे ये भारी ।
'हरि' कर जय तेर लिये प्र० ॥११॥

☆

स्तवन—९।

(तर्ज—मेरे मौला मदीने बुलालो मुझे)

आदिनाथ अनादि कलंक हरो।
मांगे सादि अनंत के मान भरो॥ टेर॥
ज्ञान गुण उज्ज्वल अरूपी आप रूप आतमा।
कर्म से रूपी कलंकी हो रहा हूँ खातमा।
स्वामी कर्मों का जल्दी से आप करो। आ०॥१॥
अंतराय अनंत ने घेरा मुझे हैं सर्वथा।
जानते हैं आप, अपनी क्या कहूँ दुख की कथा।
अंतराय का अंत विशेष करो। आ०॥२॥
वर्षभर स्वामी निरंतर आपने व्रत थे किये।
वैसे करूं निर्मल मुझे बल नाथ कुछ कुछ दीजिये।
मेरी दीन दशा पर गौर करो। आ०॥३॥
आप के तप तेज ने सब लोक आलोकित किये।
उस तेज में इस दास को भी आप अपना लीजिये।
घन घोर अंधेरे को दूर करो। आ०॥४॥
सुख सिन्धु विभु भगवान हे हरिपूज्य दर्शन दीजिये।
निज दयामय दृष्टि से पियूष वृष्टि कीजिये।
बीच अन्तर को प्रभु दूर करो। आ०॥५॥

स्तुति—१ ।

आदीश्वर स्वामी अंतरनामी आप,
नर्षी तप ठाया पूरे पुण्य प्रताप ।
पूरव कृत दुष्कृत अंतराय कर दूर,
प्रकटाया पावन परमातमपद नूर ॥ १ ॥
कर्मों को तोडे बिना न होवे सिद्धि,
कर्मों के हटते होती सिद्धि समृद्धि ।
अगमें जो पाते होते हैं वे सिद्ध,
उनको नित वन्दूं जिन गुण सार विशुद्ध ॥२॥
कर्म सभी जड आतम के आधार,
दिखलाते अपना अद्भुत बल विस्तार ।
कर्मों की सारी रचना श्री जिनदेव,
आगम में भाषे रूच सदा मैं सेव ॥३॥
चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी माय,
गरुडासन धारी करती भक्त सहाय
हरिपूज्य प्रभु की शासन देवी आप,
मा हरो हमारे पाप ताप सन्ताप ॥ ४ ॥



स्तुति—२ ।

गुणमा हुलास के कर गाद ममदान,
पुर मदि दर्मा दर्मो उग दम्न ।
ि र माम्त बाँधें निब मैंनदहन्न,
वीतिर मारे उठ उठदाम मदन्न ॥१॥

इन्द्रागान म्न धमा गन्नि निकार,
निा माँ दाै प्रोी वम दिका ।
भगाम उपजै दमाहन १ं धर,
घ्यवर्णिक निवर बन्दु दा.दर ॥२॥

नि प निदामा मर दग उयमदार,
दाा उयम म मान गनम्त्र दिपार ।
पानादिक गानो गहतेनी ममनार,
बिन मगम बोने मुनी मदा धनार ॥३

दनिपुन्य गुणदा निन जामन म म र
माबि औ मानावे उनर अमिर मनार
मन दशो देश दिपन हरे मनहन्न,
गुण मणि पूर मशो मशो नकार ॥४

स्तुति--३ ।

वद चैत की आठम प्रथम धारें नाथ,
साधु हो जावें चार सहस नर साथ ।
पूरब भव भावी विघन घनाघन जोर,
वर्षीतप ध्यानें हरें नमूं कर जोर ॥ १ ॥
भिक्षाविधि जानें नहीं लोक सविशेष,
देवें कन्या हय हाथी मणि मय वेश ।
वर्षाधिकव्रतधर वीतराग अवतार,
मौनी महात्यागी प्रभु की जय जयकार ॥२॥
जाती समरण से श्रीश्रेयांस कुमार,
प्रभु रूप पिछाने भिक्षा विधि विचार ।
इक्षु रस अमृत वहिरावे शुभ भाव,
जिन आगम बोधे जय जय पुण्य प्रभाव ॥३॥
हरिपूज्य प्रभुका तप पारणदिन सार,
पावन तम जगम अखातीज जयकार ।
सोनैया सुमनस सुगंध जल वरसाद,
सुर असुर करें जग जय जय पुण्य प्रसाद ॥४॥



स्तुति—२।

प्रभु आदि [illegible],
आदि जिन [illegible] ।
[illegible],
[illegible] ।१॥
[illegible] हो [illegible] हो [illegible],
[illegible] ।
[illegible] अपनी [illegible],
[illegible] ॥२॥
[illegible] सुनावें [illegible],
[illegible] ।
उन [illegible] जिनके [illegible],
आदर [illegible] ॥३॥
[illegible] करके [illegible],
[illegible] प्रभु ने [illegible] ।
[illegible] कर्मों को [illegible],
[illegible] ॥४॥

स्तुति—५।

अवसर्पिणी तीजा आरा अंत अनंत,
 युगधारी प्रकटे आदीश्वर जयवंत।
साधु हो साधें वर्षाधिक तप घोर,
 कर्मों को वारों वन्दू जुग कर जोर॥ १॥
सम्यग्दर्शन वर ज्ञान चरण चित धार,
 साधक जन साधें आतम गुण अविकार।
रूपी भावों को तन मन आप सरूप,
 आतम परमातम वन्दू त्रिभुवन भूप॥ २॥
वर्षातप आदि हैं तप विविध प्रकार,
 उपशम धर भावे आराधक अधिकार।
जिन आगम गाथे गुरुगम साधन सार।
 सिद्धिगति पावें शाश्वत सुख भंडार॥ ३॥
सुखसागर स्वामी ऋषभदेव भगवान,
 जिनहरिपूज्येश्वर शासन विनय विधान।
आराधें सुविहित तप विधि जो नर नार,
 चक्केसरी गोमुख उनको दे सुख सार॥ ४॥

★

[illegible]

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति

चैत्यवन्दन—१।

(शिखरिणी)

(१)

[illegible]
[illegible]
[illegible],
महावीरस्वामी भवतु [illegible] ॥

(२)

[illegible],
[illegible] ।
[illegible],
महावीरस्वामी भवतु भगवान् पावनपदः ॥

(३)

गुणाम्भोधिः श्रीमान् [illegible],
महायोगी त्यागी [illegible] ।
[illegible],
महावीरस्वामी भवतु शिवदो [illegible] ॥

चैत्यवन्दन–२

(हरिगीत)

(१)

समार सुखकर सर्वदुःख हर अतुल बलशाली प्रभु,
निश्चय उसी भव मोक्षगामी संयमी होते विभु ।
उपसर्ग से निश्चल रहे निज साधना में जो सदा,
वन्दू उन्हीं श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

(२)

संगम अधम सुर ने उपद्रव दुष्टता से जब किये,
षट्मास तक भगवानने व्रत तप निरन्तर थे किये ।
शान्ति क्षमा गुण धीरता धरवीरता रक्खी सदा,
वन्दू उन्हीं श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

(३)

प्रभु वीतदूषण ज्ञान भूषण पुण्य गुण भंडार हैं,
सुख सिन्धु हैं जग बन्धु हैं भगवान हैं आधार हैं ।
हरिपूज्य हैं मा बाप हैं हतपाप हैं जो सर्वदा,
वन्दू उन्हीं श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

चैत्यवन्दन–३ ।

[illegible]

(१)

सम सरन जिन विराजे,
[illegible] [illegible] थी ।
सुमति [illegible] और मैं,
[illegible] ॥

(२)

प्रथम [illegible] [illegible] [illegible]
गुन [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
अति उत्तम [illegible] लो ।

(३)

प्रथम [illegible] [illegible] [illegible],
पर सुन्दर [illegible] [illegible] नहीं ।
अपने आप [illegible] [illegible] गया,
अब [illegible] [illegible] [illegible] ।

(४)

अब दीपक हो गुर था गया,
प्रभु [illegible] [illegible] दयानिधि ।

नयन में करुणानल था भरा,
सुर निरर्थक दुर्गति पायगा ॥
(५)
जय सुखोदधि शासन नाथ हे,
जिनपते भगवान् जगदीश्वर ।
धन घड़ी धन मास्य करे हरि,
विनय वन्दन वीर जिनेश को ॥

चैत्यवन्दन–४ ।

(१)
स्वयंबुद्ध परमातमा, महावीर भगवान् ।
तीर्थंकर चोईसवें तप गुण पुण्य प्रधान ॥
(२)
छहमासी तप दो किये, पांच दिवस कम एक ।
महा अभिग्रह साथ में, क्षमा सहित सविवेक ॥
(३)
चौमासी नव की प्रभु, त्रिमासी दो बार ।
ढाइ मासी दो दफे, दो मासी छह बार ॥
(४)
डेढ मास दो बार तप, करें प्रभु सुविलास ।
मास खमण बारह तथा, बहुत्तर आधे मास ॥

(३)

सुर [illegible] में दिवस, [illegible] हिन्दु [illegible] ।
[illegible] जिन [illegible] [illegible] [illegible] ।

(५)

[illegible] [illegible] [illegible] किये, [illegible] में [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।

(७)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।

(८)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] हिन्दु [illegible]
जिन [illegible] [illegible] है, [illegible] प्रभु [illegible] [illegible] ।

१—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible]
[illegible] दिन [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिन [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] का [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] थे
थे । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

छमासी अभिग्रह चैत्यवन्दन--५

(१)

महावीर महिमा निधि-वद मास-प्रधान।
छद्मासी दिन पाचकम-उपवासी भगवान॥

(२)

पोष वदी पडिवा प्रभु महाअभिग्रह धार।
इस हालत में दे यदि गोचरी पे आहार॥

(३)

नप कन्या दासी हुई, मुण्डित मस्तक-केश।
पड़ी बेड़िया पैर हा, रोती हो सविशेष॥

(४)

अन्दर बाहिर पग किये, द्वार दहेली के पास।
उड़द बाकुले छाज में लिये हुए हो खास॥

(५)

भिक्षा से निवृत्त हों सब भिक्षाचर लोक।
अष्टम तप के पारणे, घर हर मात अशोक॥

(६)

सतियों में मोटी सती, चन्दन बाला सार।
पूर्ण अभिग्रह को करे, धन धन धन अवतार॥

(७)

सुख सागर भगवान "निन हरि" पूजित अविकार।
महातपस्वी वीर को—वन्दू वारवार॥

ढाल—२

(धन—भेख उतारो राजा भरथरी)

रे मन प्रभु गुण मे रमो, प्रभु हैं तारण हार ।
रे मन० ॥ टेर ॥

सगम सुर उपसर्ग मे अनुपम आतमध्यान ।
धारें वीर प्रभु नमो—भक्ति भाव प्रधान ।
रे मन० ॥ १ ॥

धूली[1] वर्षा सुर करे, भरे निज मन पाप ।
घनूघुरी[2] करे चींटियें, पर प्रभु निर्मल आप ।
रे मन० ॥ २ ॥

मच्छड[3] डास घिमेलें[4] से चटकावे प्रभु अंग ।
छोडे बिच्छु[5] नेवला[6], चूंहे[7] काले भुजंग[8] ।
रे मन० ॥ ३ ॥

हांथी[9] हथणी[10] मदभरे, नाटे व्याघ्र[11] कराल ।
अट्टहास्य करे अरे, होकर दुष्ट वेताल[12] ।
रे मन० ॥ ४ ॥

तेन हना[13] तलवारसी-और आंधी[14] अपार ।
फैलावे सुर पर प्रभु—आतम गुण अविकार ।
रे मन० ॥ ५ ॥

ढाल—३

(तर्ज—थोड़ीसी जिंदगी के वास्ते क्या तुम कड़वा बोलो)

महावीर स्वामी जैसे वीर जग में और नहीं है ।
धीर वीर गंभीर ज्ञानी और नहीं है ॥ टेर ॥
मन वच तनु तीनों योग जिनके आतम योगी ।
शाश्वत सुखमें लीन, दूसरा नाम नहीं है ॥
महावीर स्वामी० ॥ १ ॥

संगम सुर उपसर्ग करता नाना भाती ।
छह महीना महावीर मन में क्षोभ नहीं है ॥
महावीर स्वामी० ॥ २ ॥

कह थक गया सुरलोक-सुरपतिने तिरस्कारा ।
धन प्रभु वीर महावीर मनमें क्रोध नहीं है ॥
महावीर स्वामी० ॥ ३ ॥

इच्छा रोधन योग प्रभु तपधारी भारी ।
छह मासी उपवास विषय की आश नहीं है ॥
महावीर स्वामी० ॥ ४ ॥

सुखसागर भगवान सुरगणपति हरि वंदे ।
महावीर स्वामी जैसे वीर जग में और नहीं है ।

यम नियमादिक आठ साधना, [illegible]
मन वच काया योग एकत्रा [illegible]

[illegible]

परमातम पर ज्योति रूपे त्रिभुवन [illegible]
हे प्रभु कृपया दो उपकारी निज [illegible]

[illegible]

हो अकाम मनसे तप कैसे [illegible]
प्रभु पद म तन्मय हो जाऊ, यह सिद्धि [illegible]

[illegible]

राज योग हठ योग न जानू, [illegible],
इडा पिंगला नहीं सुषमणा, [illegible]

[illegible]

उपसर्गों म रहूँ अचल [illegible]
ऐसी शक्ति दीन प्रभुवर, [illegible]

[illegible]

शूलपाणि अरु चण्डकौशिक [illegible]
आत्म बोध पाये प्रभु तुमसे [illegible]

[illegible]

सुखसागर भगवान तुम्हारे [illegible]
शरणागत वत्सल सुख [illegible]

स्तुति—१

(१)

द्वादशांगी वन्दे पावन जिनवर वीर,
अखिल सुरासुरनमित आगम गम्भीर ।
गणधर गुरु द्वारा रच उपांग अनेक,
वन्दूं उपदेशी वीतराग जिनेन्द्र ॥

(२)

प्रभु शिक्षा में जिन का है समसार
अविरागी अनुपम जिनवर गुण भण्डार ।
उपयोग शुद्धि गुरुलच्छन परिचारी,
त्रिपद सार वागीश्वर उच्चारी ॥

(३)

द्वादशांगी सब की महिमा अगम अपारी,
निष्काम भाव से करें भविक नरनारी ।
भव सागर तिरने भरत पुण्य भण्डारी,
जिन आगम सार चाऊं मैं बलिहारी ॥

(४)

सिद्धायिका देवी मातंग यक्ष सहाई,
आराधे उन की करती नित्य सहाई ।
जिन श्रीपुष्पेश्वर वर्धमान भगवान,
सेवा अनुरागी दे मनवांछित दान ॥

स्तुति—२

(१)

प्रभु वीर जिनेश्वर महा अभिग्रह धारें,
छहमासे उण दिन पाच महातप धारें।
चदन बाला के उड़द बाकुले नाव,
तप धारें धन धन भविजय जोड़ हाथ॥

(२)

द्रव्य क्षेत्रादिक भेद विशेष विचार,
धर दिव्य अभिग्रह पालन तप गुण धार।
धर्मो जो भेटे जगमें जो नर नार,
सिद्धातम होवें वह नारनार॥

(३)

सब छोड परिग्रह सयम साधन हेतु,
भव सागर तारण कारण शुभ गुण सेतु।
तप सहित अभिग्रह महिमा अपरपार,
जिन आगम सार बोल्यो जय जय कार॥

(४)

जिन हरिपूजित पद शासन अनुपम एक,
जो सेवें भविजन त्रिकरण शुद्धि विवेक।
सिद्धायिकादेवी सिद्ध करे सब काज,
तपधारी जनके, घरमें अविचल राज॥

श्री बीस स्थानक तप—

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति

चैत्यवन्दन—१

दूहा—

बीस स्थानक भावना, साधे जो नर नार।
तीर्थंकर पदवी लहे, वन्दूं वारंवार॥

(हरिगीत)

जिन पद भावन चाह श्रीअरिहंत पद पहिले नमूं,
शिव अकल और अनंत अव्याबाध सिद्ध सुपद नमूं।
वर ज्ञान दर्शन चरण भूमि मय प्रवचन पद नमूं,
ज्ञानादि पंचाचार युत आचार्य पद अनुपम नमूं॥
सद्धर्म म थिर करण कारण विविध पद सविनय नमूं,
निज पर समय पाठक बहुश्रुत भक्तिभर भाव नमूं।
इच्छा सुरोधन घोर तप साधक तपस्वी पद नमूं,
सर्वज्ञभाषित नित्य आगम ज्ञान पद पावन नमूं॥
तत्त्वार्थ में श्रद्धा अशक्ति मात्र दर्शन पद नमूं,
शुभ ज्ञान दर्शन चरण कारक वर विनय पद को नमूं।
चरण करणादि क्रिया चारित्र पद निर्मय नमूं,

शील व्रतादिक सावना पद ब्रह्मचर्य सदा नमू ॥
प्रति समय शुभ सवेग आदिक भावना किरिया नमू ,
बारह प्रकारी बाह्य अभ्यन्तर सुतप पद नित नमू ।
सत पात्र में शुभ दान, मर्ने त्याग त्याग सुपद नमू ,
दश विध महागुण भार वयावच पद गतमद नमू ॥
औषध प्रमुख से साधु जन सुखकर समाधिपद नमू ,
अक्षर पद श्लोकादि रूप अपूर्व श्रुतपद नित नमू ।
गुरु ज्ञान परिणमनादि श्रुत बहुमान पद सादर नमू ,
प्रवचन प्रभावन पद परम उन्नति करण कारक नमू ॥

दूहा—

सुखसागर भगवान 'जिन हरि' पूजित पद सार ।
लट भमरी के न्याय से ध्याउ धन अवतार ॥

चैत्यवन्दन—२ ।

(रामगिरि रागेण गीयते)

(१)

विंशति स्थानकाराधनायोगत ,
सभवेत्तीर्थकृन्नामकर्म ।
तीर्थकृन्नामकर्म प्रभावादहो,
जायतेऽनन्तगुणसिद्धिशर्म ॥ विंश० ॥

(२)

चैत्रो नारि एतत्पदाराधन,
शुद्धविधि कुर्वते शान्तमारैः
सर्वमसा रिपुर्व्यात्मतां आप्नुयात्,
भेदरहितात्मना सर्वथा वै ॥ विश० ॥

(३)

एक मेक पद चापि मर्यादयेद,
सर्वपद पुण्यमहिमा ह्यनन्त ।
तज्जन्ता अनन्ता जना मानतो,
येन हरिपूजनार्हा भवन्त ॥ विश० ॥

चैत्यवन्दन–३ ।

(१)

बीस स्थानक तप किया, प्रकटे पुण्य अगाध ।
तीर्थंकर पद प्राप्त हो, हो सुख अव्याबाध ॥

(२)

तीर्थंकर जो हैं हुए, होंगे तीनों काल ।
बीस स्थानक साधते, तजकर आल पपाल ॥

(३)

अर्हतादिक बीस पद, भेदा भेद विचार ।
निज पद में प्रगटे यदि, धन धन वह नर नार ॥

(४)

शक्ति रूप सबमें रहे, व्यक्त होय निवियोग ।
व्यक्त हुए उनको नमूं, सविनय त्रिकरणयोग ॥

(५)

सुखसागर भगवान जिन, हरिपूजित जगदीश ।
सन्मय वन्दूं तीर्थपति, उपकारी चौवीस ॥

चैत्यवन्दन--४ ।

(द्रुतविलंबित)

(१)

विजयि देव जिनेश्वर विश्व में,
भव भयकर दुःख हरें सदा ।
विशद वीस सुथानक सेवना,
विधि दिखाई नमूं शुभ भावसे ॥

(२)

जगतमें जितने पद और हैं,
परम आतम उन्नति के लिये ।
विलसते सब थानक वीसमें,
प्रभु दया नित सेवन में करूं ॥

(३)

सुखनिधे भगवान् हरिपूज्य हे,
सुखद शक्ति कृपाकर दीजिये ।
परम शत्रु हटाकर मैं वरूं,
तव पदाम्बुज पावन सेवना ॥

स्तवन—१ ।

(तर्ज—सिद्ध चक्रपद वंदो रे भविका०)

बीस थानक जय कारी रे सेवो उपकारी अविकारी ।
तीर्थंकर पद हेतु भवोदधि तारण सेतु सुखकारी ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ टेर ॥

अरिहंत सिद्ध सुपावन प्रवचन आचारज गुणधामी ।
थिविर बहुश्रुत दिव्य तपस्वी ज्ञानं परम अभिरामी ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ १ ॥

दर्शन विनयं चरणं शीलव्रत किरियां परम नयारे ।
तप पद त्याग विशद वैयावच्च शुद्ध समाधि उदारे ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ २ ॥

अपूर्वश्रुत अभ्यास ज्ञान बहु, मान अबोध निवारे ।
तीर्थ प्रभावना करते आतम, परमातम पद धारे ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ ३ ॥

प्रति पद महिमा अनुपम अद्भुत श्रीसद्गुरु पतरे ।
सरल अशठ थिर भाव साधक निरखे भाव स्वभावे ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ ४ ॥
प्रसिद्ध मन छठ अट्ठम, आप बीस बीस निरताया ।
ज्ञाताधर्म कथादिक पावन ग्रंथे भव्य बनाया ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ ५ ॥
सब पद में अधिका तप तपने आठ करम तप जारे ।
क्षयोपशमत आतम निर्मल-ज्योति आप जगावे ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ ६ ॥
किरिया विरहित जीवन पावन विषय विकार विहीना ।
बीस थानक गिर थानक दाना-सपित आनंदपीना ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ ७ ॥
प्रात संध्या आवश्यक विधि प्रतिक्रमण शुभ भावे ।
पदगुण माला ध्यान पूरव गलित पाप हटावे ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ ८ ॥
देव वन्दन गुरु वन्दन नमिनय तन्मय सद्गुणयोगी ।
अविराधक साधक हो अन्या बाधपरम गुणभोगी ।
रे सेवो बीस थानक० ॥ ९ ॥
षड दश मत छठ अट्ठम तपने आगमन हो पूरा ।
तीर्थंकर पद तुरत प्रकट हो, कमा का चकचूरा ।
रे सेवो बीस थानक० ॥१०॥

उद्यापन अधिकारी होवे सुखसागर भगवाना।
हरि पूजित जिन भाषित साधन साधे पुण्य प्रधाना।
रे सेवो बीस थानक० ॥११॥

स्तवन—२।

(तर्ज—बिना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है)
गजल

नमूं जिन देव जयकारी, हृदय शुधभाव लाकरके।
जपूं नित नाम की माला, हृदय शुधभाव लाकरके॥ टेर॥
तिराव तीर्थ कहलाता, प्रभुजी आप तीर्थकर।
मैं आउ आप तक कैसे? हृदय शुध भाव लाकरके ॥न०॥
प्रभुजी बीस थानक तप, तपाता आठ कर्मों को।
सन्निधि माधु कहो कैसे? हृदय शुध भाव लाकरके ॥न०॥
जिनेश्वर आप ज्योतिर्मय, महा अंधेर हरते हैं।
सुज्योति पाउ मैं कैसे? हृदय शुध भाव लाकरके ॥न०॥
प्रभु अरिहंत हैं स्वामी, सुनामी सिद्ध सुखकारी।
बनूं सुखिया यहां कैसे? हृदय शुध भाव लाकरके ॥न०॥
अगम सुख सिन्धु हे भगवन् परम हरिपूज्य उपकारी।
मिलुं मैं आप से कैसे? हृदय शुध भाव लाकरके ॥न०॥

स्तवन—३ ।

(तर्ज—मैं आया तेरे द्वार पर कुछ लेकर जाऊंगा)

श्री तीर्थकर भगवान् सम्यक्दार ध्याऊंगा ।
दर्श सेवा करके प्रेम से तन्मय हो जाऊंगा ॥ टेर ॥
बीस स्थानक साधना शुद्ध करके दिखलाई ।
मैं भी निज शक्ति साधना में नाथ लगाऊंगा । श्री० ॥१॥
जगजीव दया का पाठ प्रभुवर पहिले दर्शाया ।
निज जीवन में मैं दया भावना को अपनाऊंगा । श्री० ॥२॥
मद माया मिथ्या जाल को जिनवर ने तोड़ा है ।
प्रभु भव्य भावना में निज मन को रोज रमाऊंगा । श्री० ॥३॥
निज महा लागनी जोत प्रभु परमातम पूर है ।
निज अमर आतम लीन हुआ मैं भी गुण गाऊंगा । श्री० ॥४॥
प्रभु सुखसागर भगवान जिन हरिपूजित उपकारी ।
मैं गरिहारी योगों से पूजा प्रेम रचाऊंगा । श्री० ॥५॥



स्तवन—४ ।

(तर्ज पचरंगिया थासु म न लगी र सन्मे मार [illegible])

तीर्थंकर बंदो बार दु ख वार तिहुंकाल म ॥ टर ॥
अनुपम आतम दर्शन योगे, परमातम पद ध्याने ।

जल मे कमल रह ज्यो जीवन, साधरपद सनमाने ।
रे तीर्थंकर वदो॰ ॥ १ ॥

महा मोहमति मूढ जगत जन हों जिन शासन रागी ।
आधि व्याधि उपाधि मुक्त हो, भार मुखी बड भागी ।
रे तीर्थंकर वदो॰ ॥ २ ॥

तीन भुवन उपकार भाव, कल्याण मित्र जयकारी ।
पुण्य महोदय गुणी महाशय, अधिकारी अवतारी रे ।
रे तीर्थंकर वदो॰ ॥ ३ ॥

बीस स्थानक महा साधना, साधक निज मन दीजे ।
उत्तरोत्तर सुकृत सुख भोगी, प्रभुता गुण रस भींजे ।
रे तीर्थंकर वदो॰ ॥ ४ ॥

सघ चतुर्विध तीर्थ थापते, अद्भुत अतिशय धारी ।
तीर्थंकर वर नाम कर्म को, सफल करें बलिहारी ।
रे तीर्थंकर वदो॰ ॥ ५ ॥

जनम मरण जीवन कल्याणी, जग कल्याण विधाता ।
तीर्थंकर दर्शन धन पाऊं, धन दिन पुण्य प्रभाता ।
रे तीर्थंकर वदो॰ ॥ ६ ॥

प्रभु दर्शन परमारथ पूरण, जो कर पावे प्राणी ।
ज्योतिर्मय जग मे वह पावन, खोले निज गुण खाणी ।
रे तीर्थंकर वदो॰ ॥ ७ ॥

अरिहंतादिक बीस पदों की, सेवा शिव सुखकारी।
अप्रमत्त भावे कर भविजन, पावें पद अविकारी।
रे तीर्थंकर पदो० ॥ ८ ॥
आठ सिद्धी नवनिधि निज परम प्रकट परमोदारी।
तीनलोक साम्राज्य सम्पत् स्वामी बने विचारी।
रे तीर्थंकर पदो० ॥ ९ ॥
बीस स्थानक विधि जिन आगम, गुरु गम से नरनारी।
आराध साधे निज सिद्धि, अजरामरपदधारी।
रे तीर्थंकर पदो० ॥१०॥
सुखसागर भगवान महोदय, जिन हरि पूजित स्वामी।
बीस स्थानक गुणी-गुण गाऊं, सागर सदा नमामि।
रे तीर्थंकर पदो० ॥११॥

स्तुति—१।

बीस स्थानक में गुणि गुण भेदाभेद,
ध्याता औ ध्यान निर्भय भाव अभेद।
तीर्थंकर पदवी पाय पुण्य प्रधान,
वंदू त्रियोगे त्रिकरण शुद्धिविधान ॥१॥
त्रैकालिक भाव तीर्थंकर भगवान,
भव सागर तारण कारण रूप महान।

जल मे कमल रह ज्यों जीवन, सावकपद सनमाने ।
रे तीर्थंकर वंदो० ॥ १ ॥

महा मोहमति मूढ जगत जन हों जिन शासन रागी ।
आधि व्याधि उपाधि मुक्त हो, भाव सुखी बड भागी ।
रे तीर्थंकर वंदो० ॥ २ ॥

तीन भुवन उपकार भाव, कल्याण मित्र जयकारी ।
पुण्य महोदय गुणी महाशय, अधिकारी अवतारी रे ।
रे तीर्थंकर वंदो० ॥ ३ ॥

बीस स्थानक महा साधना, साधक निज मन दीजे ।
उत्तरोत्तर सुकृत सुख भोगी, प्रभुता गुण रस भीजे ।
रे तीर्थंकर वंदो० ॥ ४ ॥

संघ चतुर्विध तीर्थ थापते, अद्भुत अतिशय धारी ।
तीर्थंकर वर नाम कर्म को, सफल करें बलिहारी ।
रे तीर्थंकर वंदो० ॥ ५ ॥

जनम मरण जीवन कल्याणी, जग कल्याण विधाता ।
तीर्थंकर दर्शन धन पाऊं, धन दिन पुण्य प्रभाता ।
रे तीर्थंकर वंदो० ॥ ६ ॥

प्रभु दर्शन परमारथ पूरण, जो कर पावे प्राणी ।
ज्योतिर्मय जग में वह पावन, खोले निज गुण खाणी ।
रे तीर्थंकर वंदो० ॥ ७ ॥

अरिहंतादिक बीस पदों की, सेवा शिव सुखकारी।
अप्रमत्त भावे कर भविजन, पावें पद अधिकारी।
रे तीर्थ कर वंदो० ॥ ८ ॥
आठ सिद्धी नवनिधि निज घरमें प्रकटे परमोदारी।
तीनलोक साम्राज्य सपदा दामी बने विचारी।
रे तीर्थ कर वंदो० ॥ ९ ॥
बीस स्थानक विधि जिन आगम, गुरु गम से नरनारी।
आराधे साधे निज सिद्धि, अजरामरपदधारी।
रे तीर्थ कर वंदो० ॥१०॥
सुखसागर भगवान महोदय, जिन हरि पूजित स्वामी।
बीस स्थानक गुणी गुण गाऊं, सागर सदा नमामि।
रे तीर्थ कर वंदो० ॥११॥

स्तुति—१।

बीस स्थानक मे गुणि गुण भेदाभेद,
ध्याता जो ध्यावे निर्भय मान अखेद।
तीर्थ कर पदवी पावे पुण्य प्रधान,
वंदू विधियोगे त्रिकरण शुद्धि विधान ॥१॥
त्रैकालिक भावे तीर्थ कर भगवान,
भव सागर तारण कारण रूप महान।

होते हैं होंगे और हुए पदवीस,
सेवा से मेवा वन्दू जिन जगदीश ॥२॥
बीस स्थानक तप साधन सुखद विधान,
ज्ञातादिक आगम गावे गुरु गम ज्ञान ।
आराधे भविजन पावे पद कल्याण,
सुविहित निज आगम वन्दू जीवनप्राण ॥३॥
हरि पूजित श्री जिन शासन शामित सार,
भवि बीस स्थानक साधन पुण्य प्रसार ।
सुर असुर उन्हीं के होय सहायक आप,
फैले त्रिभुवन में साधक पुण्य प्रताप ॥४॥

स्तुति—२ ।

बीस स्थानक में सत्य देव गुरु धर्म,
तीनों तत्वों से कट जाते दुष्कर्म ।
तीर्थंकर पदवी प्रकटे तीनों रत्न,
वंदू नित सविनय पावन पुण्य प्रयत्न ॥१॥
बीस स्थानक है जिन आतम के सार,
साधें जो भविजन परमातमपद दाय ।
सत चित आनंदे रमण करें ध्यान माग,
वन्दू ज्योतिर्मय वीतराग महाभाग ॥२॥

प्रति पद की महिमा अगम अपरपार,
गुरुन विधियोगे आराधे नर नार।
आगम अनुसारें बीस बीस उपवास,
बला तेला से प्रगट परम प्रकाश ॥ ३ ॥
बीस स्थानक सुखसागर दिव्य तरंग,
भवताप मिटावें माहि अनंत सुभंग।
आराधक जन के सुरगणपति हरि आप,
फैलावें अगम अनुपम पुण्य प्रताप ॥ ४ ॥

स्तुति—३।

अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरि थिविर बहुश्रुत स्थानी,
तपसी नाण सुदर्शन सविनय चारित्र शील सुखस्थानी।
किरिया तप तत्त्वारथ वयावच समाधि अभ्यासोनी,
नाण सुभक्ति तीर्थ प्रभावन थानक शम मिलासोनी ॥१॥
समकितशांति विषय विरागी चरणें कमल समानानी,
नर जन प्रभु शासन अनुयायी करण सुभाव प्रधानानी।
बीस स्थानक आराधन कर तीर्थंकर-पद-धारीनी,
हुए है होते हैं होंगे वन्दू गुण अविकारीनी ॥ २ ॥
चार सो जन या बेला तेला प्रतिपद बीस निशानेनी,
तन्मय होकर पद गुण माला बीस बीस कर ध्यानेनी।
बीस स्थानक आराधन विधि जिन आगम से जानोनी,
व्रत पूरण उद्यापन पारन जिनवीसन धन मानोनी ॥३॥

सुरसागर भगवान महोत्सव जिन शासन सुखकारीनी,
हरिपूजित वीस स्थानक तप जा करते नर नारीनी ।
शासन देवी देव उन्हीं के होवे मानिक कारीनी
करण करावण अनुमोदन फल पावे [illegible] बलिहारीनी ॥४॥

स्तुति—४ ।

(राग [illegible])

श्री जिन [illegible]
तीर्थङ्कर [illegible] राजत [illegible]मा ।
ज्योति स्वरूप [illegible] सुभर [illegible]
[illegible] [illegible] जिन [illegible] ॥१॥
श्री जिन [illegible] स्थानक [illegible]
[illegible] [illegible] तरङ्गस्मि ।
ये तन्मग [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]द्वार ॥२॥
श्री जि[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]—[illegible]पम् ।
रत्नत्रय [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ॥३॥
श्री जिनपति-[illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
समेऽपि [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥४॥

श्री उपधान तप

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति



चैत्यवन्दन—१

दुहा—

स्वस्ति श्री सुखकर सदा, वर्द्धमान भगवान ।
स्वयंबुद्ध ज्ञाता पति, धर्म विनय निधान ॥१॥
श्रुत परमत पारनिधि, पञ्चालम पद सत ।
योगाचरण भाव से, भाष्य जिन भगवन्त ॥२॥
जिन आगम उद्धार में, पञ्चाशक विचार ।
आत्म भाव भावना, भावें जिन व्यवहार ॥३॥
उपादान आतम गुण, ज्ञानाचार प्रकार ।
महा निशीथ भावक पर, उद्यम कर उपधान ॥४॥
गुण सागर भगवान जिन, हरिपूज्येश्वर वीर ।
आज्ञा की आराधना, करे धन्य शरीर ॥५॥

१—चार निक्षेप व्यवहार "ज्ञानाचार" इति ज्ञानाचार भेद ।

चैत्यवन्दन--२ ।

(द्रुतविलम्बित छंद)

परम पावन बोध विधान म, रविसमान जिनेश्वर वीर को ।
सकल योग समाधि निमित्तम, हृदयसे नत मस्तक हो नमू ॥१॥
भव भयंकर सागर में अहो ! सविधि साधक तारण के लिये ।
विनयी वीर जिनेश्वर देवका, चयतु शासन जीवन पोतसा ॥२॥
"उप" समीप मना परमात्मक, सुगुरु के सहयोग विशेष से ।
प्रति दिनातम "धान" सुधारणा, सफलता प्रभु के उपधानमें ॥३॥
समवधान रहे उपधान में, प्रभु पद प्रकट परमात्मता ।
परम तत्त्व विराम विलासते, जलमना मरणा विरता समी ॥४॥
सहज हो भवसागर लीनता, सुगम हो भवदुस्तर तारना ।
विनमी करें 'हरि' वन्दन वीर को, विधि करूं उपधान विधान से

चैत्यवन्दन--३ ।

(वसन्ततिलका छंद)

श्रीवर्द्धमान भगवान महान वीर !
सर्वाङ्गि-पाप मल शोधन हेतु नीर ! ।
संसार ताप शमनार्थ समीर सीर,
वन्दे मना सरल हो भवसिन्धु तीर ॥१॥

—उप समीप धान धारणा उपधानम् इति व्युत्पत्ति ।

हे नाथ नित्य भवदीय पुनीत आज्ञा,
पालूँ यथा प्रभु मुझे बलशक्ति देना।
हो कर्म रोग भव भोग वियोग मेरे,
साधूँ स्वयं चरणमें सहयोग सेवा ॥२॥
निस्सारता प्रकट है फिर भी प्रभो हा,
संसार में रत रहूँ सुविडम्बना है।
सद्बोध शक्ति दयया वरदान देना,
त्यागूँ निजात्म उपधान करूँ यथा मैं ॥३॥
स्वामी न है हृदय में श्रुत भक्ति मेरे,
किंचित् नहीं कर रहा गुरु भक्ति को भी।
पुण्यप्रधान उपधान विधान योगे,
मांगूँ करो सुकरुणा करुणानिधान ! ॥४॥
देवाधिदेव सुगमिन्दु जिनेश वीर !
आधार एक जग में बस आपका है।
तीर्थेश शासनपते ! हरिपूज्य नाथ !
त्वदीय प्रसाद महिमा विलसारेण ॥५॥

१—उपधान में १—प्रभु आज्ञा का पालन २—तपस्या से कर्मों की निर्जरा ३—असार भूत शरीर से आत्म साधन रूप सार ग्रहण ४—श्रुत भक्ति ५—सद्गुरु भक्ति ६—इन्द्रिय जय ७—मधुर भावना आदि सदनुष्ठान की परंपरा होती है।

चैत्यवन्दन--४ ।

(शिखरिणी छन्द)

अनन्तात्म ज्योति प्रकट विमल प्रौढ महिमा,
चिदानन्द स्फूर्ति प्रगुणगणसत्कीर्तिगरिमा ।
अरागी अद्वेषी परम समता धाम जग में,
महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ! ॥१॥
सुनाय भव्यों को समवसरणे निश्चिततया,
सभी गणधरों को विशदविधिसे अर्थ[1] कहके ।
उत्पाद-व्यय ध्रुवक नय-स्याद्वादिक जड़ो,
महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ! ॥२॥
जिन्हा मा में ज्ञानादिक गुणमणि-ज्योतिर्विलसती,
मिलेगी ध्यानोंसे नियम उपचार रतितया[2] ।
प्रभो वाणी सच्ची 'हरि' सुन मुखासे फिर कहो,
महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ॥३॥

१— अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउणा । निर्युक्ति ।
२— ध्यान तप से सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र आदि गुणों की ज्योति प्रकटती है ।

चैत्यवन्दन-५ ।

(शार्दूल विक्रीडित)

[illegible] [illegible] स [illegible]या [illegible] मला [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] म मति [illegible] पावें [illegible] [illegible] ।
[illegible] या [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं [illegible] या [illegible] ही,
[illegible] श्री [illegible] [illegible] नम्र [illegible] [illegible]मया ॥१॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मन भी यदि,
[illegible] [illegible] उपधान म [illegible] [illegible] [illegible] भक्ति गामी नहीं ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मल्लगा,
[illegible] श्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शुभ [illegible] ॥२॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]गाज्वल ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भक्ति से ॥३॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का मोक्ष का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दोनों आवश्यक है ।

स्तवन—१

(तर्ज—केसरिया थासु प्रीत करी रे सवा),
महावीर जिनंदा स्वामी सुखकन्दा मेरू भाव मे ॥ टेर ॥
तप उपधान विधान बताया, अर्थ रूप अरिहन्ता।
सूत्र रूप गूथे उपकारी, गणधर गुरु गुणवंता रे । म० १।
बहुश्रुत अध्ययने श्री उत्तरा–ध्ययने है अधिकारा।
महानिशीथ महासिद्धान्ते, सुवतविधिविस्तारा रे ॥म० २।
ज्ञानाचार सुभेद विचारे, इह उपधान विधाना।
आराधक साधक मनिभाव,धन धन पुण्य प्रधाना रे ॥म०३।
नवकारादिक शुभ सूत्रों को, शास्त्र कथित विधीयोगे।
सद्गुरु मुख से ग्रहण कर नर, नारी पुण्य प्रयोगे रे ॥म० ।
'उप' का अर्थ निकट सद्गुरु के, या अपने आतम के।
'धान' अर्थ आतमका धारण, अर्थ यही गुरुगम के रे ॥म०५।
है उपधान महातम भारी, लाभ अनेक अपारा।
प्रभु तुम आज्ञा पालन, करते भवसागर निस्तारा रे ॥म०६
गुरु गम विधि तप करते होती, कर्म निर्जरा भारी।
पोषह करते मुनिपद तुलना, पर पाऊ बलिहारी रे ॥म०७
पांचों इन्द्रिय जय कर पाऊ, करू कषाय निरोधा।
सवर करणी करते निशदिन, पाउ निजपद बोधा रे ॥म०८
निंदा विकथा लेश न होवे, आतम ध्यान चढाउ।
प्रभु परमातम तुमपद सेवा, तनमन से लय लाऊ रे ॥म०९

चउगति भीम भयंकर भरमें, मानव भव शुभ पाया ।
पाया मङ्गल कर प्रभु तुमको, उपधान मन भाया रे ।।म० १०।
सुखसागर भगवान् तू ही है, जिन हरिपूज्य हमेशा ।
दर्शन वन्दन स्पर्शन करने, रहे न रंच कलेशा रे ।।म० ११।।

स्तवन—२ ।

(तर्ज—[illegible] नदी सुलतान)

तारक तीर्थ नाथ नमूं उपकारी रे वर्द्धमान भगवान् ।
केवलज्ञान विराजित नित अविकारी रे सुजान ।। तार ।।
समवसरण में नायक परिषद आगेर वीतराग महान ।
तप उपधान प्रधान विधान जु भाषे रे सुजान ।। ता० १ ।।
आतम शत्रु कर्म महा दुखदायी रे हैं अतिबलवान ।
बिन तपनाम न जीत सके ना कोई रे सुजान ।।ता० २ ।।
तज परमाद विषाद पराक्रम धारो रे तन मन थिर ठान ।
धर्म पराक्रम होत जय जय कारी रे सुजान ।। ता० ३ ।।
पांचों समवायी कारण में जानो रे उद्यम परधान ।
गुरु गम कर उपधान सुसाधो सिद्धि रे सुजान ।। ता० ४।।

१—कार्य सिद्धि में काल स्वभाव नियति पूर्वकृत कर्म और पुरुषकार ये ५ समवायी कारण माने जाते हैं।

पंचमंगल[1]-श्रुतस्कन्ध गुणगण धारी रे परमेष्ठीस्थान।
जिन आतम में व्यक्त करो उपयोगे रे सुजान ॥ता० ५॥
प्रतिक्रमण[2] श्रुत स्कन्ध समाराधन में रे तन पाप निदान।
भव संताप समाप्त सभी हो जावे रे सुजान ॥ ता० ६॥
शक्रस्तव[3] अध्ययन प्रभु गुणगाते रे चढ़के गुणस्थान।
उत्तरोत्तर प्रभु पावन पदवी पायो रे सुजान ॥ ता० ७॥
चैत्य[4] स्तवन अध्ययन मनन चिंतन से रे रूप ध्यान।
करके आतम परमातम लय लागो रे सुजान ॥ता० ८॥
नाम[5] स्तव अध्ययने जिन चोबीसी रे चीनन परमान।
निजरीना उत्तम प्रीति करो भाव रे सुजान ॥ ता० ९॥
श्रुत स्तवन[6] सिद्धस्तवन[7] गावन रस रे प्रगटे निदान।
ज्योतिर्मय सिद्ध तन्मय हो जावो रे सुजान ॥ता० १०॥
गात करो उपधान सात भय भागे रे मुनमात प्रधान।
जागे गुण अनुरागे शिवसुख जागे रे सुजान ॥ता० ११॥
सुखसागर भगवान परमपदगामी रे नामी अरधान।
घन उपधान विधान बताया ध्याउ रे सुजान ॥ता० १२॥
जिन हरि पूज्य सुतीर्थनाथ स्वामि रे समरिक्रमिनप्रान
वर्द्धमान भगवान वीर अधिकारी रे सुजान ॥ ता० १३॥

१—नवकार मंत्र। २—इरियावहिया और तस्सउत्तरी।
३—नमुत्थुणं। ४—अरिहंत चेइयाणं। ५—लोगस्स।
६—पुक्खरवरदीवड्ढे। ८—सिद्धाणं बुद्धाणं।

स्तवन—२।

(राग—[illegible])

थार प्रभु की मुद्रा रूप रसाल हो,
मन मारे [illegible]
[illegible] मिट जावे [illegible] हो,
मनमारे [illegible] ॥ टेर ॥

प्रभु पद का उपधान [illegible] हो,
[illegible] प्रभु [illegible] ।
गुण[illegible] [illegible] हो,
[illegible] ॥ थी० १ ॥

[illegible] हो,
[illegible] ।
[illegible] हो,
[illegible] ॥ थी० २ ॥

[illegible] प्रभु वाणी हो,
गुणखाणी [illegible] सुना करूं ।
[illegible] अभिरामी हो,
[illegible] ॥थी० ३॥

सूत्र ग्रहण की शक्ति यह उद्देशा हो,
मति शेषा समुद्देश मार मरू ।
सूत्र पठन पाठन की पावन आज्ञा हो,
अनुज्ञा सद्गुरुवर से प्राप्त करू ॥श्री० ३॥
महामंत्र नवकार सुमहिमा भारी हो,
अधिकारी साधू सहजे सिद्धि वरू ।
पूर्व चतुर्दश सार भूत सुखकारी हो,
अविकारी पाप ताप परिहार करू ॥श्री० ४॥
आतम गुण पोषक पौषध व्रतधारी हो,
निरधारी निरतिचारतया विचरू ।
दिव्य देव वंदन कर नित्यानन्दी हो,
निर्द्वन्दी सद्गुरु सेवा करू ॥ श्री० ५ ॥
देहादिक ममता तज जिनपद ध्यानी हो,
गत मानी सौ लोगस का ध्यान करू ।
परमेष्ठि गुणमाला निर्मलगीसे हो,

१—सूत्र ग्रहण की शक्ति को अर्थात् सूत्रारंभ को उद्देश कहते हैं। २—सूत्र ग्रहण की विशेष शक्ति को 'समुद्देश' कहते हैं। ३—सूत्र पठन पाठन की आज्ञा को 'अनुज्ञा' कहते हैं। ४—उपधान में पौषध करना होता है। ५—सौ लोगस का काउस्सग्ग करना होता है। ६—२० बंधी नवकार वाली जपनी होती हैं अथवा जीवविचार नवतत्त्वादिक प्रकरणों का २००० श्लोक प्रमाण स्वाध्याय करना चाहिये।

निज नीमे पिण्डस्थादिक भेद करूं ॥वी०७॥
दुर्लभ मानव भव में प्रभु पद सेवा हो,
सुख मेवा दाती है नित्य करूं ।
आतम परमातम पद पूरण प्रकाशे हो,
सुविलास अनन्त आनंद मोज करूं ॥वी०८॥
गुणसागर भगवान वीर जय कारी हो,
भयहारी सेवा करके अभय वरूं ।
जिन हरि पूज्य परमपद के उपधाने हो,
गुणठाने ऊंचे ऊंचे चढा करूं ॥ वी० ६ ॥



स्तवन---४ ।

तर्ज प्रभु धर्मनाथ म्हारे प्यारा जगजीवन मोहन गारा)
राग—दनमाला

महावीर प्रभु भगवान, नित वन्दूं विनय निधाना ।
प्रभुका करके उपधाना, नित करूं प्रभुपद ध्याना ॥टेर॥
स्वामी उपधान बताया, सद्गुरु मम विधि सिखलाया ।
मात मय मान भगाया, सुख ग्यान प्रवान उपाया ॥म०१॥
पहिले दज उपधाने, वर नहीं रचना ठाने ।
दन दीम [illegible], व्रत मांही बारह जाने ॥

शुभ पाच तीस दिन तीजे, व्रत भी उन्नीस करीजे ।
चोथा दिन चार करीने, द्वादश व्रत साधन कीजे ॥म०३॥
पंचम अडतीस गिनाया, व्रत साढी पनरह पाया ।
छट्ठे पुन दिन दिखलाया, व्रत साडातीन सुहाया ॥म०४॥
सप्तम उपधान सुहाया व्रत चौविहार इक गाया ।
क्रम सुविहित गण मन हारा, अनमद्भुत [illegible] बताया ॥म
करी मन वाछना त्यागी [illegible] अनुपम अविरागी ।
भवाम्बुध उभय विभागी, भवसागर तारणहारी ॥म०६॥
हो सावधान उच्चारे पावन व्रत शुद्धि विचारे ।
सो लोगस पावन ध्यावे, प्रभु माला शीश चढावे ॥म०७॥
उप आगम निकट में नाना [illegible] सिद्धानो ।
'उरगण' मध [illegible], [illegible] सिद्धि सिद्धानो ॥म०८॥
जिन आज्ञा पालन हार, गुरु साधन शुभ होय ।
फिर पाप ताप मिट जाय, सुरगण विशुद्धि उपाये ॥म०९॥
सुन्दर तर श्री धर्माला, मुनि मण्डल धरमाला ।
सम्पूर्ण रूप गुणशाला, भगवति म पद्म माला ॥म०१०॥
सुखसागर श्री भगवाना, [illegible] सम्माना ।
जिन हरिपूजित [illegible] ॥म०११॥

---

१ — [illegible]
[illegible]

आप बताया मोक्ष उपाउ, रूडू प्रभु उपधान रे ।।जि०७।।
काल अनादि कुबोध मिटाउ आतम बोध विशेष ।
कर्म कलंक मिटा अरूपी पाउ गुण अविरोध रे ।।जि०८।।
प्रभु पद सेवा निजपद दायक शिव संपत्ति निधान ।
सरल सुकोमल भाव धरू जिन-भाव हो सावधान रे ।।जि०।।
गुणसागर भगवान तुम्हो हो-शासन नायक वीर ।
हो सर्वज्ञ करूँ क्या स्वामी सिद्धपदकी तदबीर रे ।।जि०१०।।
जिन हरि पूज्य प्रभु तुम सेवा वर पाउ अविराम ।
केवल एक यही वर मागू करूँ पुण्य प्रणाम रे ।।जि०११।।

स्तुति—१ ।

श्री वर्द्धमान जिनेश जगदाधार शासन नाथ को ।
कर विनय वन्दन के लिये मैं नित्य जोडूं हाथ को ।।
प्रभु चरण में उपधान की आराधना सुखदायिका ।
माडूं सुखद समाधिका दाती स्वय शिवनायिका ।।१।।
सद्ज्ञान के आचार में उपधान भेद विशेष है ।
करते हुए शुद्ध बोध से सब दूर होते क्लेश है ।।
होते हुए होंगे त्रिकालिक भाव में उपधान से ।
जन सिद्ध वो वन्दूं उन्हें शुभ भावपूर्णऽवधान ।।२।।
उपधान अर्थ विशेष फरमाया स्वय अरिहन्त ने ।
वर ग्रन्थ में गूंथा मधुर गणधार गुरु गुणवन्त ने ।।

उपधान द्वचक छत पालन अर्थ तदुभय मर्यादा ।
सुनता रहूँ करता रहूँ श्री सुगुरु गम पारग मुदा ॥३॥
उपधान के सुविचार में जो सावधान बने रहें ।
सुखसिन्धु वे भगवान पदवी अन्त में पाते रहें ॥
समदृष्टि देवी देवगण नायक हरि संकट हरें ।
सपदि सबें सुखको करें जय जय हमेशा उचरें ॥४॥

स्तुति—२

अधिकार बिना की बातें व्यर्थ अनेक,
अधिकारी बातें सकल सफल सविवेक ।
चौदह पूरब का सार मंत्र नवकार,
अधिकारी होकर आराधूं जयकार ॥१॥
सुविहित गुरु सेवा द् अधिकार अशेष,
अधिकार बताया उपधाने सविशेष ।
जो पुण्य प्रभावे पावें मानें भाव,
साधक सिद्धातम पद् निजगुणदाव ॥२॥
उपधान बताया भाव भेद सिद्धान्त,
आराधन करते भय भागे एकान्त ।
श्रीमहानिशीथे उत्तराध्ययनस्वरूप
गुरु गम आगमू दूर करूं भवरूप ॥३॥
हरि पूजित श्रीजिनशासन धामित देव,
उपधानी उनकी आपद हरें सदैव ।

सुरमणि सुरतरु भी सुलभ रूप हो जाय,
प्रमुदित हो जगजन पावन कीरति गाय ॥४॥

स्तुति—२

शासन पति वद् महावीर भगवान,
प्रभु समवसरणमें उपदेशें उपधान।
आराधक भविजन यथाशक्ति आराध,
सिद्धिगतिपावें जिनमुख अव्याबाध ॥१॥
उपधान बताये सात, अनेक प्रकार,
आराधन विधि भी यथायोग्य अधिकार।
साधक जन पावें कर्म रोग मिट जाय,
जिनपद परमेष्ठी पावन गुण प्रकटाय ॥२॥
जीवा जीवादिक तत्त्वारथ उपयोगी,
बारह व्रत धारी दृगविरतिगुण भोगी।
उपधान विधानी होते हैं गुणरागी,
जिन आगम माव जीवन में बडभागी ॥३॥
सुखसागर सच्चा पद उपधान प्रधान,
आराधक होते अतगति भगवान।
जिन हरि पूजित पद सेवें देवी देव,
दुख दोहग टाले सुख पूरे स्वयमेव ॥४॥

स्तुति—४।

जिन आना पालन-सवर साधनयोग,
सुव्रत आराधन आतम गुणउपयोग।
उपधाने होते भावें श्रीभगवान,
महावीर जिनेश्वर वदू विनय विधान ॥१॥
अतिचार विना की क्रिरिया कारण रूप,
करते जो भविजन होते त्रिभुवन भूप।
सब कर्म खपा कर परमातम पद आप,
प्रगटावें वन्दू सिद्ध जगत मावाप ॥२॥
श्री पचमगलश्रुत-रांधान्कि है मात,
उपधान करणसे मागे भय भी सात।
सुखमाला प्रगटे यथाशक्ति अभिराम,
जिन आगम बोले प्रात करू प्रणाम ॥३॥
सुखसागर प्रभुवर महावीर भगवान,
जिन हरिपूज्येश्वर उपदेशा उपधान।
आराधे उनके रोग शोक सताप,
समकित दृष्टि सुर मटें वढे प्रताप ॥४॥

स्तुति—५।

उप निकट सुगुरु के ज्ञानादिक गुणधाम,
आतम का धारण धान अर्थ अभिराम।

फरमावे प्रभुवर वीतराग अरिहंत,
नित वन्दू भावे थी जिनवर जयवंत ॥१॥
उव आतम निकटे हाण कर्म की साध,
उवहाण अरथ यह समरथ अव्याबाध।
जो पावें आतम परमातम पद रूप,
वंदू नित उनको मन चित ज्योतिसरूप ॥२॥
बीसइ दो भाखे वर पंतीसइ एक,
अट्ठावीसइ चउ छक्कइ पक्कइ एक।
सविवेक समाराधन जिन आगम सार,
वन्दू आराधू पाउ पद अविकार ॥३॥
भाखें उपधाने सुखसागर भगवान,
जिनहरि पूज्यवर फरमाया फरमान।
आराधो मनिजन देवी देव हमेश,
सब चिंता चूर चिंतित दें सविशेष ॥४॥

इति उपधान तप चैत्यवन्दन–स्तवन
स्तुति संग्रह समाप्त

श्रीमहावीर सप्तविंशति भव वर्णन ::

❀ वृहत् स्तवन ❀

दोहा –

श्री महावीर जिनेंद्र को, नमन करूं चित लाय ।
भव सतावीस मैं कहूँ, सुण कर गुरू सुपसाय ॥

ढाल १

वर्द्धमान जिनवर तणानी चरण नमूं चितलाय ० (इस तर्ज में)
भविकजन वीर चरित चितधार, वरलो समकित सार भ० ॥टेर॥
पश्चिम महाविदेह मे जी, "नयसार" नाम सुथार ।
काष्ठ हरण रण में गयोजी, लागी भूख अपार ॥भवि० ॥१॥
भोजन करने के लिये जी, बैठा तरुवर छांह ।
तत्क्षिण मन परिणित हुई जी, पामी हर्ष उछांह ॥भवि०।२॥
अतिथि जो आवे यहा जी, होवे भावसमुद्ध ।
भाग्य उदय हो मारो जी, देऊं दान विशुद्ध ॥भवि० ।३॥
मारग सम्मुख देखते जी, बैठो 'श्री नयसार" ।
भाग्य सयोगे भेटियानी पथ चूके अणगार ॥भवि० ।४॥
मन म हर्ष धरी करी जी, पहुँच्यो मुनिवर पास ।
धन्य घड़ी दिन आज है जी, पूगे मुझ मन आश ॥ भवि० ५॥

भाव देख "नय सार" के जी, आये मुनि महाराज ।
शुद्धमान आहार को जी, लेवें संयम काज ॥ भवि० ६॥
भव्य जीव तब जान के जी, दर्ब गुरु उपदेश ।
समकित मोती उरधर्यो जी, छीप स्वाति जल लेश ॥भवि०७॥
द्रव्य भाव मारग लहेंजी साधु "श्री नय सार" ।
साधु संग साधुता जी, प्रत्यक्ष है निर्धार ॥ भवि० ८॥
भव पहिले समकित लहोनी जीने भव "देवलोक" ।
पहिले एक पल्योप म जी, 'हरि' सुख पावे अशोक ॥भवि०९॥

दोहा—

सौधर्मा सुर लोक में, भोगवी सुख अपार ।
"दक्षिण" भरते अवतया, श्री नयसार सुधार ॥

ढाल २

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी० (इस तर्ज में)

विनिता नगरीर "चक्री भरत" के, घर में लियो अवतारजी ।
नाम दियो शुभ "मरिची" तात ने, उत्सव पूर्वक सारजी ॥
देखो २ रे करम तणी गति, भूलादे निज भान जी दे० ॥टेर॥
बाल कालकौर छोड युवा भयो, करे अनेक विलास जी ।
एक दिन नन्दन आदि विनद भयो, पायो बोध विकास जी ॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १ ॥

वैराग रंग रे दिक्षा ले सदा, सेवे श्री जिननाथ जी।
तीव्र तपस्या रे शरीर सह नहीं, जाणी छोडे साथ जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ २ ॥
हो एसारी रे मन में चितवे में करू नूतन चाल जी।
हाथ कमण्डलु सिर छत्री धर, पग चाखडी गले माल जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ३ ॥
हाथ त्रिदण्ड रे भगवा वेष में, राखि हुआ जेण चित्त जी।
मुंड मुंडावे रे चोटी सिर धरे, राखे यज्ञोपवीत जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ४ ॥
स्नान करे और जाप जपे सही, आदि जिनंद त्रिकाल जी।
कन्द मूल रा रे नित भक्षण करे, करे समकित समाल जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ५ ॥
प्रभुजी के पीछे रे पीछे रहे सदा, विचरे देश विदेश जी।
समवसरण सब सुरपति जब कर, बैठे बहिर प्रदेश जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ६ ॥
आवे कोई रे वन्दन कारणे, दे सच्चा उपदेश जी।
संयम रंगे रे रंगी भाव से, भेजे प्रभुजी के पास जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ७ ॥
करते पावन अवनीतल प्रभु, आवे नगरी 'विनीता' जी।
भरतादिक सब नरसुरवर मिलि, वदन करे इक चित्त जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ८ ॥

वदन करके रे निज थानक प्रति, बैठे भरत सनूरजी।
बार परखदा रे बैठी देख क, पूछे भूप पडूर जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ९ ॥
आप समान रे कोई जीव है, समवसरन मझार जी।
भाखे प्रभु जी रे बाहिर है सही, मिरची नाम कुमार जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १० ॥
चौबीस आरे के होगा अन्त में चोवीसम "श्री वीर जी"।
'क्षत्रिय कुंड' रे 'सिद्धारथ' घरे, 'त्रिशला' नन्दन वीरजी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ११ ॥
श्री मुख वाणी रे 'भरत' सुणी करी, पाया हर्ष अपार जी।
मरिचि निकट में रे जावे प्रेम से, बोले वचन उदार जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १२ ॥
तू वासुदेव रे पहिलो भरत में, मुकाविनये चक्री जी।
फिर तू होगा रे जिन चोवीसमो, महावीर नामे नकी जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १३ ॥
पहिली दूजी रे पदवी को नहीं, नाही त्रिदंडी वेष जी।
श्री तीर्थंकर पद को मैं नमूं, सुन श्री जिन उपदेश जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १४ ॥
वन्दन करके रे भरत घरे गयो, सुन कर नाचे मरिची जी।
धन २ कुल को रे धन मुन वश जो धन शुभ करणी ऊचीजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १५ ॥

मेरे दादा रे तीर्थंकर हुए, तात हुए मुज चक्री जी।
उन दोनों से रे अधिका मैं हुआ, वासुदेव पद चक्री जी॥
देखो २ रे करम तणी गति॥ १६॥
तीर्थंकर की रे पदवी मुझको, होगी विमला वीस जी।
तीनों पदवी को मैं भोग के, लूगा मुक्ति जगीश जी॥
देखो २ रे करम तणी गति॥ १७॥
नाचकूद क रे कूलसे मद कर्या, नायो कर्म को बध जी।
'हरि' कह तातें रे होगा देखना, नीच गोत्र सम्बन्ध जी॥
देखो २ रे करम तणी गति॥ १८॥

दोहा—

बहुत समय क बाद में, उपना रोग शरीर।
वैयावच क कारणे, बोलाव मुनि धीर॥१॥
देख त्रिदंडी वेष को कोई न पूछे सार।
उद्वेगी हो कर करे मन में खूब विचार॥२॥

ढाल ३

भेख रे उतारी राजा भरथरी० (इस तर्ज में)
स्वारथ का ससार है, स्वारथ विन नहीं कोय जी।
रोग हुआ मुझ अग में, कोई न पूछे आय जी॥
पश्चाताप करे घणो, करतो हृदय विचार जी॥ टेर॥
अब जो मुझ साता हुवे, तो शिष्य करू दो चार जी।

शिष्य बिना संसार में, कोई न करे उपगार जी ॥
पश्चाताप करे घणो ॥ १ ॥

रोग गयो साता हुई, आया कपिल कुमार जी।
उपदेश दे के भेजियो, समवसरण मंझार जी॥
पश्चाताप करे घणो ॥ २ ॥

ऋषभ जिनन्द वन्दन करी, देखो मरीचि तिवार जी।
धर्म नहीं मम मारग में, जिनवर गुरु पासे सार जी।
पश्चाताप करे घणो ॥ ३ ॥

दीक्षा आप कपिल कहे, तुमरो मत में धर्म जी
यहाँ तो कुछ भी है नहीं, संसार कारण कर्म जी।
पश्चाताप करे घणो ॥ ४ ॥

मन में हर्ष धरी कहे, मरीची सुणो कपिल जी
सत्य धरम तुम को कहूँ, दोनों जगह जताय जी
पश्चाताप करे घणो ॥ ५ ॥

धर्म बतायो आप को, मन कल्पित करे धर्म जी
कोड़ा कोड़ी सागर थिति, भव भ्रमण बांधा कर्म जी
पश्चाताप करे घणो ॥ ६ ॥

लाख चौरासी पूर्व का, भोगवी आयुष्य कर्म जी
भव तीजा पूरा करे, जाय पांचवें स्वर्ग जी
पश्चाताप करे घणो ॥ ७ ॥

चोथे दश सागर महा सुख भोगी सुर लोक जी।
पांचवें कोल्लाक ग्राम मे, हुआ ब्राह्मण कौशिक जी॥
पश्चाताप करे घणो ॥ ८ ॥
आयुष अस्सी लाख को, त्रिदण्डी ले भेख जी॥
छट्ठे भव फिर द्विज हुआ, बहत्तर पूरब लाख जी॥
पश्चाताप करे घणो ॥ ९ ॥
त्रिण्डी साधु हुआ, थुणा नगरी मझार जी।
मरक सातवें भव गया, पल्य सुधर्मा मार जी॥
पश्चाताप करे घणो ॥ १० ॥
अग्नि धोत द्विज आठमें, साठ पूरब लख आय जी।
त्रिण्डी नव में भयी, दूजे देव में जाय जी॥
पश्चाताप करे घणो ॥ ११ ॥
दशमें भव मन्दिर पुरे, अग्नि भूति द्विज नाम जी।
छप्पन पूरब लाख में, त्रिदण्डी भयो नाम जी॥
पश्चाताप करे घणो ॥ १२ ॥
इग्यारम भव सुर भयो, तीने सनत कुमार जी।
ग्यम श्वताम्बीनगरी में, भारद्वाज द्विज मार जी॥
पश्चाताप करे घणो ॥ १३ ॥
चालीस लाख पूरब भलो, ग्यार में त्रिदण्डीनाण जी।
मरक चौ महेन्द्र मे, तेरम भवगुण खाण जी॥
पश्चाताप करे घणो ॥ १४ ॥

राजगृह में द्विज हुओ, थावर नाम चौविंश जी।
पूर्व आयुत्रिदण्डीयो, चौदवें भव सुजगीश जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १५ ॥

पनरम ब्रह्म म अवतर्यो, सोलम विश्व भूति वीर जी।
विद्यानन्दी घर जमियो, धारणीकुखी से दीव जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १६ ॥

वीर चरित शुभ भाव से, हरि गावे गुण धाम जी।
सार विचार सुधार के, पायो शिव आराम जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १७ ॥

दोहा—

बाल चाल को छोड के, भयो सुजान कुमार।
वाडी म सुख भोगवे, नित प्रति सुर समसार॥ १ ।
देखी राज कुमार मन, उपज्यो द्वेष कराल।
आप पिता को यों कहे, दो वाडी ततकाल॥ २ ।
ज्ञात करें निज पुत्र को, सोचे भूप उपाय।
विश्व भूति को भेजता, वश कारण सिंह राय॥ ३ ।
जीत पकड़ लाया दिया, निज चाचे के हाथ।
वाड़ी में जाने लगा, जय कीरति के साथ॥ ४ ।
द्वार पाल तब यों कहे, रहते राज कुमार।
नहीं आ सकते आप अब, तब जाने छल सार॥ ५ ।

पुन' क्रोध से वह कहे, सुन लेना नर नार।
वश अग में ना करू, नहीं तो क्या है भार ॥ ६ ॥
चूरे वृक्ष कवीठ का, दे कर मुष्टि प्रहार।
निज दुश्मन को चूरते, लगे जु इतनी वार ॥ ७ ॥

ढाल ४

माथा फाटे र आला जार का० (इस तर्ज म)

तुम देखो भाई गहन गति रे गतिचार की ॥ टेर ॥
सभूति गुरु पास मेरे जा कर दिक्षा लीघ।
तपस्या कर निज काय सुकाई, वर्ष हजार प्रसिद्ध जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १ ॥
विचरन्ता अवनीतलेरे, मथुरा पुर में जाय।
मैरे ज्यों गोचरी फिरते को, पाड़े दौडी गाय जी ॥
तुम देखो माई ॥ २ ॥
विशाख नन्दी भाई चचेरा, हंस कर बोले वानी।
कवीठ फल बल गयो कहा रह, अरे महा अभिमानी जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ३ ॥
सुन कर साधु परिणति पलटी, क्रोध हुआ विकराल।
गाय घुमाई सींग पकड कर, छोड दिई ममाल जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ४ ॥

देखा वल अरु तप फल, हो तो पूरव भव निर्धार ।
मारूं मैं तुझको यों कहते, विश्वभूति अणगार जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ५ ॥
कर निदान अनशन करीर, महा शुक्र में जाय ।
सतरह में भव म सुखविलसे, उत्कृष्ट स्थिति पाय जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ६ ॥
पोतन पुर नृप प्रजापति की पुत्री रत्न रुची ।
भव अष्टादश में वह जनमा, सप्त सुपन की साक्षी जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ७ ॥
विशाख नन्दी जीवसिंह को, मारी वासुदेव ।
त्रिपृष्ठ नामे हुआ भरत में, करता सुरनर सेव जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ८ ॥
पाप पुष्ट उन्नीसम भव में, सप्तम नर के जाय ।
वीसम भव में, सीम भयङ्कर, सिंह हुआ वन राय जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ९ ॥
इकीसम भव चोथी नरक से, निकल फिरे ससारा ।
बाईसम भव साधारण नर, पुण्य किया व्रत धारा जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १० ॥
तेईसम भव राय धनञ्जय, धारिणी कुखे आय ।
चौद सुपन सूचित चक्रवरिया, प्रिय मित्र चक्रीराय जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ११ ॥

ट्टीलाचारन से दीक्षा, शीक्षा युत ले पाले ।
र्ष कोटि संयम आराधी पाप पुञ्ज को बाले जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १२ ॥

हाशुक्र में चौवीसमभव, सुर पदवी सुखकारा ।
चीसम भव में फिर होवे, नन्दन राजकुमारा जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १३ ॥

क्षा पोटील सूरि से ले, वीस पदों को ध्यावे ॥
र्थंकर नाम नजन कर, भाव दया दिल भावे जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १४ ॥

ख वर्ष चारित्र पालते, धानजीव उदारा ।
स खमण से कर पारणा, क्षमा सहित हितकारा जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १५ ॥

ैं लाख पचीस धारे, आयुष अपना भोगी ।
ार्ि कहे नित वन्दु नन्दन, महा तपस्वी योगी रे ॥
तुम देखो भाई ॥ १६ ॥

दोहा—

प्राणत नामक स्वर्ग में, पुष्पोत्तर सुविमान ।
छब्बीसम भव में वहां, सुर सुरनाथ समान ॥१॥
देव लोक सुख भोगते, करते पुण्य विधान ।
जिन यात्रा स्नात्रादि में, निश दिन सावधान ॥२॥

बीस सागर आयुस्थिती, पूर्ण भई जब सार ।
च्यवन दु:ख नहीं जानते, तब च्यवते निर्धार ॥३॥
च्यवन कल्यानक के समय, भुवन भयो कल्यान ।
पुण्यवान जावे जहाँ प्रकटे वहा निधान ॥४॥

ढाल ५

"राग—गुजराती गरबा पद्धति"

भविया वीर चरित्र पवित्र हृदय में धारनारे ।
भीषण भव सागर से कैसे पावे पार ॥
इस का वीर चरित में खूब किया विस्तार ।
आतम परिणत कर निज कर्म विचार विचारना ॥टेर॥
साखी—पूर्व गोत्रमद करन से, नीच गोत्र कर बन्ध ।
सत्तागत उस कर्म से, हुआ उदय सम्बन्ध ॥
सत्तावीसम भव ब्राह्मण कुल में, अवतारना रे ।भवि०
साखी—"ब्राह्मण कुण्ड" सुगांव में "ऋषभदत्त" वरनाम ।
"देवानंदा" ब्राह्मणी, तस गृहिणी गुणधाम ॥
करती चौदसुपनलखत, दिव्यगरभ प्रतिपालनारे ।भवि०
साखी—शक्रसिंहासन थरहर्यो, जाने च्यवन सुरिंद ।
सात आठ पग सामने, जा वन्दे जिन चन्द ।
शक्रस्तव की सविनय शक्र करे उचारनारे ॥भवि०

साखी–पूर्वाभिमुख सिंहासने, वन्दन करके इन्द्र ।
बैठ सचिन्त विचारता, पुरुष अलौका वृन्द ॥
भिक्षादिक नीच कुलमें, जन्म न लें निर्धारनारे । मनि०४।
साखी–हरिण गमेषी देव को, हुकम करे सुरराय ।
क्षत्रिय कुण्ड सुगाम म, श्रीसिद्धरथराय ॥
त्रिशलादेवी कुक्षि श्रीजिन को सचारनारे । मनि०५ ।
साखी–हरिण गमेषी देव तब, दिव्य गति को धार ।
देवानन्दा कूख से, करे प्रभु अपहार ॥
दूजा गर्भ हरण कल्याणक शास्त्र धारनारे । मनि०६ ।
साखी–सिंहादिक चौदह सुपन, देखे परम उदार ।
त्रिशला निजपतिसे वदा, सुनती स्वप्नविचार ॥
होगा चक्री वा तीर्थङ्कर सुन सुखकारनारे ।मनि० ७ ।
साखी–बीते नौ महीने उपर, दिन जब साढे सात ।
हस्तोत्तर नक्षत्र में, जनमे त्रिभुवन तात ॥
तीजा जन्म कल्याणक, तीन भुवन जयकारनारे । मनि०८।
साखी–छप्पन दिशा कुमारिया सूति कर्म कर जाय ।
सुरपति सुर सह सुरगिरी स्नात्र महोत्सव ठाय ॥
सुरपति शङ्का स्वामीकरते, दूर निवारनारे ॥ मनि० ९॥
साखी–सिद्धारथ दश दिन करे, उत्सव विविध प्रकार ।
ज्ञाती गोत्री निमा कहे, वर्द्धमान गुणधार ॥
सुत है, वर्द्धमान शुभनाम इसे स्वीकारनारे ॥मनि० १०॥

साखी–यौवन वय नृप पुत्रिका, परणे भोगे भोग ।
अट्ठाईसम वर्ष में, माता पिता सुरलोक ॥
होते पूर्ण अभिग्रह, होती दीक्षा धारणारे ॥ भवि० ११॥

साखी–नन्दी वर्द्धन बन्धु के आग्रह से दो वर्ष ।
साधुवत् संसार में, नहीं शोक नहीं हर्ष ॥
करते दान सवत्सर से, दारिद्र विदारणारे ॥ भवि० १२॥

साखी–जय नन्दा भद्दा कहे, लोकान्तिक सब देव ।
तीर्थ प्रवर्तन को करो, हे स्वामी स्वयमेव
ज्ञाता स्वामी हैं तो भी, उनकी आचारणारे ॥ भवि० १३॥

साखी–नन्दी वर्द्धन इन्द्र सह, करें दीक्षोत्सव सार ।
द्रव्य भाव से लोच कर, तब होते अनगार ॥
यह चउज्ञान तथा कल्याण की सहचारनारे ।भवि० १४।

साखी–एकाकी योगी हुए, छठ तप के धारी ॥
बार वर्ष आरण्य में, दुःख सहें भारी ॥
जिनमें शूलपाणि संगम, कटपूतना धारनारे ।भवि०१५

साखी–घाति करम के नाश से, प्रगटा केवल ज्ञान ।
त्रिसमय भावी भाव को, तब जानें भगवान ॥
पचम कल्याणकमें करते, 'हरि' नित वन्दनारे ।भवि०१६।

दोहा —

हस्तोत्तर नक्षत्र में, ये कल्याणक पंच।
स्वाति में निर्वाण पद, छोड़े भव परपंच।

ढाल ६

सिद्ध चक्र पद वन्दोरे भविका- (राग आसावरी)

श्री जिन वीर नमामी रे भविका, श्रीजिनवीर नमामि।
केवल ज्ञान दिवाकर स्वामी, श्री जिन वीर नमामि ॥ टेर ॥
समवसरण सुर वर रचेरे, जहं राजे जिन चन्दा।
अमृत वाणी पीवत प्राणी, पावत परमानन्दा रे ॥ भवि० १ ॥
शंकित पंडित ब्राह्मण इन्द्र-भूत्यादिक दश एक।
गणधर गुणधर होते भारी, पाकर बोध जिनकर ॥ भवि० २ ॥
संघ चतुर्विध सद्गुण भावन, थापन कर सुख कारा।
द्विविध चउविध धर्म प्ररूपे, आराधक भवपारार ॥ भवि० ३ ॥
अन्तिम चउमासी प्रभु पावन, पावापुर पधारे।
सोल प्रहर तक उपदेशामृत-वर्षा अखंडित धारर ॥ भवि० ४ ॥
धर्म निपारोदय प्रभुजी के, भविजन पुण्य सहाई।
शरण योगे कारन प्रकटे, पद अनुभव थिर थाईरे ॥ भवि० ५ ॥
चौदह में गुणठाणे स्वामी, पुद्गल बन्ध वियोगी।
शैलेशी करणे वरी होते, शिव रमणी के भोगी रे ॥ भवि० ६ ॥
काती अमावस स्वाति नक्षत्रे कल्याणक निर्वाणी।

मिश्रित भावे उत्सव करते, इन्द्र तथा इन्द्राणी रे ॥ भवि० ७॥
भावोद्योत जिनेश्वर के बिन, थी अम्मावस काली ।
गण राज विरचत तब जगमें, द्रव्योद्योत दिवाली रे । भवि० ८
आदिम गौतम गणधर स्वामी, वीर विभु पटधारी ।
देव मुखे निर्वाण सुने तब शोच करे अति भारी रे भवि० ९॥
मोह दशा रजनी क्षय होते, परम महोदय शाली ।
केवलज्ञान रवि तब प्रकट्यो, प्रकटी अद्भुतलाली रे भवि० १०।
आय 'हरि' उत्सव तब रचते, करते जय जय कारी ।
गौतम वीर प्रभु नित नमते, सघमें मंगलाचारीरे । भवि ११

कलश

अति स्वच्छ खरतरगच्छ में सवेग रंग विराजते ।
श्री सद्गुरु सुख सिंधु विभु भगवानसागर गाजते ॥
तस शिष्य हरि सागर गणी उन्नीस सें त्यासी समे ।
वेरावले श्रीवीर भव गाते विनय हो सघ में ॥

वीस स्थानक संक्षिप्त विधि

शुभ मुहूर्त में सद्गुरु के पास नंदी स्थापन पूर्वक वीस स्थानक तप लेना चाहिये। वीस पदों की वीस ओली होती हैं। प्रत्येक पद का अट्ठम से छठ से चौविहार उपवास से यावत् आयंबिल एकासनादि से आराधन होता है। दो मास से छह मास में वीस-वीस यथाशक्ति अट्ठम आदि तप पूरे करने होते हैं। वीस वीस माला प्रति पद में गिननी होती है। आचार्य उपाध्याय थिवर-साधु-चारित्र गौतम तीर्थ इन सात पदों में पौषध अवश्य करना चाहिये। गुणानुवाद, आरंभत्याग, गुरु-देव भक्ति एवं आत्मचिंतन विशेषतया करना चाहिये। पद गुण के भेद प्रमाण संख्या में लोगस्स का कायोत्सर्ग एवं नमस्कार करने चाहिये। सूतक-जातक-मृतक-स्त्री धर्म आदि में तप नहीं गिना जाता। छहमास से उपर ओली नहीं होती।

श्री अरिहंत पद नमस्कार १।

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअर्हते नमः।
२ पुष्प वृष्टि „ „ „
३ दिव्य ध्वनि „ „ „
४ चामर युग „ „ „
५ सिंहासन „ „ „

६ भामण्डल " " "
७ दुदुंभि " " "
८ छत्रत्रय " " "
९ अपायापगमातिशय संयुताय
१० पूजातिशय "
११ वचनातिशय " "
१२ ज्ञानातिशय "

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं–माला २०

श्री सिद्धपद नमस्कार २ ।

(१)

१ छह संस्थान रहिताय श्रीसिद्धाय नमः ॥ ६ ॥
२ पाच वर्ण " " ५
३ दो गंध " २
४ पाच रस " ५
५ आठ स्पर्श " " ८
६ तीन वेद " " ३
३१

(२)

१ मति ज्ञानावरणीय कर्म रहिताय श्रीसिद्धाय नमः ।
२ श्रुत " "

३ अवधि " "

४ मन पर्यव " "

५ केवल " " ।५।

६ निद्रा दर्शना वरणीय "

७ निद्रा निद्रा "

८ प्रचला " "

९ प्रचला प्रचला " "

१० स्त्यानर्द्धि " "

११ चक्षु " "

१२ अचक्षु " "

१३ अवधि " "

१४ केवल " " ।९।

१५ साता वेदनीय " "

१६ असाता वेदनीय " " ।२।

१७ दर्शन मोहनीय "

१८ चारित्र मोहनीय " ।२।

१९ नरकायु "

२० तिर्यगायु "

२१ मनुष्यायु "

२२ देवायु " ।४।

२३ शुभ नाम

२४ अशुभ नाम ।२।

२५ उच्चै गोत्र	"	"	
२६ नीचै गोत्र	"	"	। २ ।
२७ दानान्तराय	"	"	
२८ लाभान्तराय	"	"	
२९ भोगान्तराय	"	"	
३० उपभोगान्तराय	"	"	
३१ वीर्यान्तराय	"	"	। ५ ।
			३१

ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाण—माला २०

श्रीप्रवचन पद नमस्कार ३ ।

१ सर्वत प्राणातिपात निरताय श्री प्रवचनाय नमः		
२ सर्वतो मृषावाद	"	"
३ सर्वतो अदत्तादान	"	"
४ सर्वतो मैथुन	"	"
५ सर्वतः परिग्रह	"	"
६ देशत' प्राणातिपात	"	"
७ देशतो मृषावाद	"	"
८ देशतो अदत्तादान	"	"
९ देशतो मैथुन	"	"
१० देशत. परिग्रह	"	"

११ स्थूा परिमाण व्रतयुक्ताय "
१२ भोगोपभोग परिमाण " "
१३ अनर्थदण्ड विरताय " "
१४ सामायिक सहिताय " "
१५ देशावगासिक " "
१६ पोषहोपवास " "
१७ अतिथि सविभाग " "
१८ विधि सूत्रागमाय नम "
१९ वर्ण सूत्रागमाय " "
२० भय सूत्रागमाय " "
२१ उत्सर्ग सूत्रागमाय " "
२२ अपवाद सूत्रागमाय " "
२३ उभय सूत्रागमाय " "
२४ उद्यम सूत्रागमाय " "
२५ सर्वनय समूहात्मक प्रवचनाय
२६ सप्तभगी रचनात्मकाय "
२७ द्वादशागी गणिपिटकाय नम

ॐ ह्रीँ णमो पवयणस्स माला २० ।

श्री आचार्यपद नमस्कार ४।

१ प्रतिरूप गुण धारकाय श्री आचार्याय नमः ।
२ तेजस्वी गुण ,, ,,
३ युगप्रधान गुण ,, ,,
४ मधुर वाक्य गुण ,, ,,
५ गम्भीर गुण
६ धैर्य गुण ,, ,,
७ उपदेश तत्पराय ,, ,,
८ अपरिश्रावि गुण ,, ,,
९ सौम्य गुण ,, ,,
१० अभिग्रह धराय ,, ,,
११ अविकथ गुण ,, ,,
१२ अचपल गुण ,, ,,
१३ संयम शील गुण , ,,
१४ प्रशान्त हृदयाय ,, ,,
१५ क्षमा गुण ,, ,,
१६ मार्दव गुण ,, ,,
१७ आर्जव गुण ,, ,,
१८ निर्लोभगुण ,, ,,
१९ तपो गुण ,, ,,
२० संयम गुण ,, ,,

२१ मत्यधर्म	"	"
२२ शौच गुण	"	"
२३ अकिञ्चन		"
२४ ब्रह्मचर्य		
२५ अनित्यभावना	भावितात्म	"
२६ अशरण भावना		"
२७ संसार भावना	"	
२८ एकत्व भावना	"	"
२९ अन्यत्व भावना	"	"
३० अशुचि भावना	"	"
३१ आश्रव भावना	"	"
३२ संवर भावना	"	"
३३ निर्जरा भावना	"	"
३४ लोक स्वरूप भावना	"	"
३५ बोधि दुर्लभ भावना	"	"
३६ दुर्लभ धर्मसार भावना		"

ॐ ह्रीं णमो आयरियाण—माला २०

श्री स्थविर पद नमस्कार ५ ।

१ लौकिक स्थविर दशकाय लोकत्तर स्थविराय नमः
२ देश स्थविर " "
३ ग्राम स्थविर " "
४ कुल स्थविर " "
५ लौकिक कुल स्थविर "
६ लौकिक गुरु स्थविर "
७ लोकोत्तर श्री सघ स्थविराय "
८ लोकोत्तर पर्याय स्थविराय "
९ लोकोत्तर श्रुत स्थविराय "
१० लोकोत्तर वय स्थविराय "

ॐ ह्रीँ णमो थेराण—माला २०



श्री उपाध्यायपद नमस्कार ६ ।

१ आचाराग सूत्र पाठकाय श्री उपाध्यायाय नम ।
२ सुयगडाग " "
३ समवायाग " "
४ ठाणाग " "
५ भगवती " "
६ ज्ञाताधर्मकथा " "

७ उपासकदशा	”	”
८ अन्तगडदशा	”	”
९ अनुत्तरोववा०	”	”
१० प्रश्नव्याकरण	”	”
११ विपाक	”	”
१२ उववाइ उपांग श्रुत		”
१३ रायपसेणी	”	”
१४ जीवाभिगम	”	”
१५ पन्नवणा	”	”
१६ जम्बूद्वीप पन्नत्ति	”	”
१७ चन्द्रपन्नत्ति	”	”
१८ सूरपन्नत्ति	”	”
१९ निरया वलिया	”	”
२० कप्पिया	”	”
२१ पुप्फचुलिया	”	”
२२ पुप्फिया	”	”
२३ वह्निदशा	”	”
२४ द्वादशांगी श्रुत	”	”
२५ द्वादशांगी श्रुतार्थव्यापकाय		”

ॐ ह्रीँ णमो उवज्झायाणं—२० माला



श्री साधुपद नमस्कार ७।

१ पृथ्वीकाय रक्षकेभ्य: सर्वसाधुभ्यो नमः
२ अप्काय रक्षकेभ्य ,,
३ तेउ काय ,, ,,
४ वाउ काय ,, ,,
५ वनस्पतिकाय
६ त्रसकाय ,, ,,
७ सर्वत प्राणातिपात विरतेभ्य
८ सर्वतो मृषावाद ,,
९ सर्वतो अदत्तादान , ,
१० सर्वतो मैथुन , ,,
११ सर्वत परिग्रह , ,
१२ सर्वतो रात्रि भोजन ,,
१३ कषाय वारकेभ्य ,,
१४ श्रोत्रेन्द्रिय विषय ,, ,,
१५ चक्षु इन्द्रिय विषय ,, ,,
१६ घ्राणेन्द्रिय विषय ,,
१७ रसेन्द्रिय विषय , ,,
१८ स्पर्शेन्द्रिय विषय ,, ,,
१९ शीतादि परीषह सहनकारकेभ्य
२० क्षमादि गुणधारकेभ्य ,

२१ भाव विशुद्धेभ्य॰ „ „
२२ मनोयोग विशुद्धेभ्य॰ „
२३ वचनयोग विशुद्धेभ्य „
२४ काययोग विशुद्धेभ्य „
२५ मरणान्त उपसर्गधीरेभ्य „
२६ अंगोपांग संकोचनशीलेभ्य „
२७ निरवद्य संयमयोग युक्तेभ्यः „

ॐ ह्रीँ णमो लोए सव्व साहुण—२० माला

श्री ज्ञानपद नमस्कार ८।

१ स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मति ज्ञानाय नम ।
२ रसनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह „
३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह „
४ श्रोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह „
५ स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह „
६ रसनेन्द्रिय अर्थावग्रह „
७ घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह „
८ चक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्रह „
९ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह „
१० मनोऽर्थावग्रह „
११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा „

१२ रसनेन्द्रिय ईहा ,,
१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा ,,
१४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा ,,
१५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा ,,
१६ मन ईहा ,,
१७ स्पर्शनेन्द्रिय अपाय ,,
१८ रसनेन्द्रिय अपाय ,,
१९ घ्राणेन्द्रिय अपाय
२० चक्षुरिन्द्रिय अपाय ,,
२१ श्रोत्रेन्द्रिय अपाय ,,
२२ मनोऽपाय ,,
२३ स्पर्शेन्द्रिय धारणा ,,
२४ रसनेन्द्रिय धारणा ,,
२५ घ्राणेन्द्रिय धारणा ,,
२६ चक्षुरिन्द्रिय धारणा ,,
२७ श्रोत्रेन्द्रिय धारणा ,,
२८ मनो धारणा ,, ॥२८॥
२९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ,,
३० अनक्षर श्रुत ,,
३१ संज्ञि श्रुत ,,
३२ असंज्ञि श्रुत ,,
३३ सम्यक् श्रुत ,,

३४ मिथ्या श्रुत ज्ञानाय नमः
३५ सादि श्रुत " "
३६ अनादि श्रुत " "
३७ सपर्यवसित श्रुत " "
३८ अपर्यवसित श्रुत " "
३९ गमिक श्रुत " "
४० अगमिक श्रुत " "
४१ अग प्रविष्ट श्रुत " "
४२ अनग प्रविष्ट श्रुत " " ।१४।
४३ अनुगामि अवधि ज्ञानाय नमः ।
४४ अननुगामि अवधि " "
४५ वर्द्धमान अवधि " "
४६ हीयमान अवधि " "
४७ प्रतिपाति अवधि " "
४८ अप्रतिपाति अवधि " "
४९ ऋजुमति मन पर्याय ज्ञानाय नमः ।
५० विपुलमति मन पर्याय " ।२।
५१ लोका लोक प्रकाशक श्री केवल ज्ञानाय नमः ।

ॐ ह्रीं णमो नाणस्स—२० माला

श्री दर्शनपद नमस्कार ६ ।

१ परमार्थ संस्तव रूप सम्यग्दर्शनाय नमः
२ परमार्थज्ञाता सेवन रूप „
३ कुलिंग दर्शन वर्जन रूप „
४ कुदर्शन वर्जन रूप „
५ शुश्रुषा रूप „
६ धर्मानुराग रूप „
७ वैयावृत्य „
८ श्रीअर्हद् भक्ति विनय रूप
९ श्री सिद्ध विनय रूप
१० चैत्य विनय रूप
११ श्रुत विनय रूप
१२ धर्म विनय रूप
१३ साधु विनय रूप
१४ श्री आचार्य विनय रूप „
१५ श्री उपाध्याय विनय रूप „
१६ प्रवचन विनय रूप „
१७ दर्शन विनय रूप
१८ ससारे जिन मति सारमिति चितन रूप
१९ ससारे जिन मति सारमिति चितन रूप
२० ससारे जिन मतस्थित साध्वादि सारमिति

२१ शङ्का दूषण रहिताय „ „
२२ काङ्क्षा दूषण रहिताय „
२३ विचिकित्सा-दूषण रहिताय „
२४ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय „
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय
२६ प्रवचन प्रभावक रूप „
२७ धर्मकथा प्रभावक रूप „
२८ वादी प्रभावक रूप „
२६ नैमित्तिक प्रभावक रूप
३० तपस्वी प्रभावक रूप „
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्याभृत्प्रभावक रूप
३२ चूर्णाञ्जनादि सिद्धि प्रभावक रूप
३३ कवि प्रभावक रूप „
३४ जिन शासन कौशल भूषण रूप
३५ प्रभावना भूषण रूप „
३६ तीर्थ सेवा भूषण रूप „
३७ धैर्य भूषण रूप „
३८ जिन शासन भक्ति भूषण रूप
३६ उपशम गुण रूप „ „
४० संवेग गुण रूप „ „
४१ निर्वेद गुण रूप

४२ अनुकंपा गुण रूप ,,
४३ आस्तिक्ता गुण रूप ,,
४४ परतीर्थिकादि वदन वर्जन रूप ,,
४५ परतीर्थिकादि नमस्कार वर्जन रूप ,,
४६ परतीर्थिकादि आलाप वर्जन रूप ,,
४७ परतीर्थिकादि संलाप वर्जन रूप ,,
४८ परतीर्थिकादि अशनादिदान वर्जन रूप ,,
४९ परतीर्थिकादि गंधपुष्पादिदान वर्जन रूप ,,
५० राजाभियोगाकार युक्ताय ,,
५१ गणाभियोगाकार युक्ताय ,,
५२ बलाभियोगाकार युक्ताय ,,
५३ सुराभियोगाकार युक्ताय ,,
५४ कान्तार वृत्याकार युक्ताय ,,
५५ गुरु निग्रहाकार युक्ताय ,,
५६ सम्यक्त्व धर्मस्य मूलमिति चिंतन रूप ,,
५७ सम्यक्त्व धर्मपुर द्वारमिति चिंतन रूप ,,
५८ धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप ,,
५९ धर्मस्याधार मिति चिंतन रूप ,,
६० धर्मस्य भाजन मिति चिंतन रूप ,,
६१ धर्मस्य निधि सन्निभमिति चिंतन रूप ,,
६२ अस्ति जीव इति श्रद्धान रूप ,,

६३ सव जीवो नित्य इति श्रद्धान रूप ,,
६४ जीव कर्माणि करोति इति श्रद्धान रूप ,,
६५ जीव कृत कर्माणि वेदयवाति श्रद्धान रूप ,,
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान रूप ,,
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धान रूप ,,

ॐ ह्रीँ णमो दमणस्स—२० माला



श्री विनयपद नमस्कार १० ।

१ श्री अरिहंत आसातना वर्जन रूप विनय गुणाय नमः ।
२ श्री अरिहंत भक्ति करण रूप ,,
३ श्री अरिहंत सन्मान करण रूप ,,
४ श्री अरिहंत वचन श्रद्धान रूप ,,
५ श्री सिद्ध आसातना वर्जन रूप ,,
६ श्री सिद्ध भक्ति करण रूप ,,
७ श्री सिद्ध बहुमान रूप ,,
८ श्री सिद्ध स्तुति करण तत्पर रूप ,,
९ सुविहित चन्द्रादि कुलासातन वर्जन रूप ,,
१० सुविहित चन्द्रादि कुल भक्ति करण रूप ,,
११ सुविहित कुल बहुमान रूप ,,
१२ सुविहित कुल सस्तुति करण रूप

१३ सुविहित कौटिकादि गण भक्ति करण रूप
१४ सुविहित कौटिकादि गण बहुमान करण रूप ,,
१५ सुविहित कौटिकादि गण सस्तुति करण रूप ,,
१६ सुविहित गण–अनासातना रूप ,,
१७ श्री संघ आसातना वर्जन रूप ,,
१८ श्री संघ भक्ति करण रूप ,,
१६ श्री संघ बहुमान करण रूप ,,
२० श्री संघ स्तुति करण रूप ,,
२१ आगमोक्त क्रिया अनासातना रूप ,,
२२ आगमोक्त क्रिया भक्ति करण रूप ,,
२३ शुद्ध क्रिया बहुमान करण रूप ,,
२४ शुद्ध क्रिया स्तुति करण रूप ,,
२५ जैन धर्म अनासातना रूप ,,
२६ जैन धर्म भक्ति करण रूप ,,
२७ जैन धर्म बहुमान करण रूप ,,
२८ जैन धर्म स्तुति करण रूप ,,
२६ ज्ञान गुण अनासातना करण रूप ,,
३० ज्ञान गुण भक्ति करण रूप ,,
३१ ज्ञान गुण बहुमान करण रूप ,,
३२ ज्ञान गुण स्तुति करण रूप ,,
३३ ज्ञानि जन अनासातना रूप ,,

३४ ज्ञानि जन भक्ति करण रूप
३५ ज्ञानि जन बहुमान करण रूप
३६ ज्ञानि जन स्तुति करण रूप
३७ आचार्य आशातना करण रूप
३८ आचार्य भक्ति करण रूप
३९ आचार्य बहुमान करण रूप
४० आचार्य स्तुति करण रूप
४१ स्थविर मुनि अनाशातना रूप
४२ स्थविर मुनि भक्ति करण रूप
४३ स्थविर मुनि बहुमान करण रूप
४४ स्थविर मुनि स्तुति करण रूप
४५ उपाध्याय अनाशातना रूप,
४६ उपाध्याय भक्ति करण [illegible]
४७ उपाध्याय बहुमान करण [illegible]
४८ उपाध्याय स्तुति करण [illegible]
४९ गणावच्छेदक अनाशा[illegible]
५० गणावच्छेदक भक्ति [illegible]
५१ गणावच्छेदक बहुमान [illegible]
५२ गणावच्छेदक स्तुति [illegible]

ॐ ह्रीं णमो [illegible]

श्री चारित्रपद नमस्कार ११ ।

१ सर्वत प्राणातिपात विरमण रूपाय चारित्राय नमः ।
२ सर्वत मृषावाद विरमण रूपाय ,,
३ सर्वत अदत्तादान विरमण रूपाय ,,
४ सर्वत मैथुन विरमण रूपाय ,,
५ सर्वत परिग्रह विरमण रूपाय ,,
६ क्षमा धर्म चारित्राय नमः ,,
७ आर्जव धर्म चारित्राय नम ,,
८ मृदुता धर्म ,,
९ मुक्ति धर्म ,,
१० तपो धर्म ,,
११ संयम धर्म ,,
१२ सत्य धर्म ,,
१३ शौच धर्म ,,
१४ अकिंचन धर्म ,,
१५ ब्रह्मचर्य धर्म ,,
१६ पृथ्वीकाय रक्षा संयम ,,
१७ अप्काय रक्षा संयम ,,
१८ तेउ काय रक्षा संयम ,,
१९ वाउ काय रक्षा संयम ,,
२० वनस्पती काय रक्षा संयम ,,

२१ चक्षुरिन्द्रिय रक्षा संयम
२२ श्रोत्रेन्द्रिय रक्षा संयम
२३ घ्राणेन्द्रिय रक्षा संयम
२४ पंचेन्द्रिय रक्षा संयम
२५ शरीर रक्षा संयम
२६ प्रेक्षा संयम
२७ अनुप्रेक्षा संयम
२८ अधिक वस्त्र भक्तादि त्याग
२९ प्रमार्जन रूप संयम
३० मन संयम
३१ वचन संयम
३२ काया संयम
३३ श्री आचार्य वैयावच्च रूप
३४ श्री उपाध्याय वैयावच्च
३५ तपस्वी वैयावच्च
३६ लघुशिष्य वैयावच्च
३७ ग्लानसाधु वैयावच्च
३८ साधु वैयावच्च
३९ श्रमणोपासक वैयावच्च
४० संघ वैयावच्च
४१ कुल वैयावच्च

४२ गण वेयावच " "
४३ पशुपडगादि सहित वसति वर्जन रूपाय
४४ स्त्री-हास्यादि कथा वर्जन "
४५ स्त्री आसन वर्जन "
४६ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन "
४७ कुड्यन्तर स्थित स्त्री हाव भाव श्रवण वर्जन
४८ पूर्व संभोग चिंतन वर्जन "
४९ अति सरस आहार वर्जन "
५० अति आहार वर्जन "
५१ अंग विभूषा वर्जन "
५२ अनशन तपो रूप "
५३ ऊनोदरी तपो रूप "
५४ वृत्ति संक्षेप तपो रूप
५५ रस त्याग तपो रूप "
५६ काय क्लेश तपो रूप "
५७ संलेखन तपो रूप "
५८ प्रायश्चित तपो रूप "
५९ विनय तपो रूप "
६० वेयावच्च तपो रूप "
६१ सज्झाय तपो रूप "
६२ ध्यान तपो रूप "

६३ कायोत्सर्ग तपो रूप ,,
६४ अनंत ज्ञान युक्त ,,
६५ अनंत दर्शन युक्त ,,
६६ अनंत गुण रमण रूप ,,
६७ क्रोध निग्रह करण रूप ,,
६८ मान निग्रह करण रूप ,,
६९ माया निग्रह करण रूप ,,
७० लोभ निग्रह करण रूप ,,

ॐ ह्रीँ णमो चारित्तस्स २०—माला

श्री ब्रह्मचर्यपद नमस्कार १२।

१ मनसा औदारिक विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्याय नमः।
२ मनसा औदारिक विषय अकारायण रूप
३ मनसा औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन रूप
४ वचसा औदारिक विषय अकरण
५ वचसा औदारिक विषय अकारायण ,,
६ वचसा औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन ,
७ कायेन औदारिक विषय अकरण ,,
८ कायेन औदारिक विषय अकारायण ,,
९ कायेन औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन

१० मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप "
११ मनसा वैक्रिय विषय अकरावण रूप "
१२ मनसा वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन "
१३ वचसा वैक्रिय विषय अकरण "
१४ वचसा वैक्रिय विषय अकरावण "
१५ वचसा वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन "
१६ कायेन वैक्रिय विषय अकरण "
१७ कायेन वैक्रिय विषय अकरावण "
१८ कायेन वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन "

ॐ ह्रीं णमो बम्भवयधराणं—२० माला

श्री क्रियापद नमस्कार १३।

१ कायिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय नमः।
२ अधिकरणिकी क्रिया "
३ पारितापनिकी क्रिया "
४ प्राणाति पाति की क्रिया "
५ आरम्भिकी क्रिया "
६ परिग्रह क्रिया "
७ मायाप्रत्ययिकी "
८ मिथ्या दर्शन प्रत्ययिकी "

९ अपच्चक्खाणी ,,
१० दृष्टि क्रिया ,,
११ स्पर्शन क्रिया ,,
१२ प्रातित्य की क्रिया ,,
१३ सामंतोपनिपातनिक्रा ,,
१४ नैशस्त्रि की ,
१५ स्वहस्तिकी ,,
१६ आणवणी क्रिया ,
१७ विदारणिया क्रिया ,
१८ अनाभोग प्रत्ययिकी ,
१९ अनवकंख प्रत्ययिकी
२० आज्ञापन प्रत्ययिकी
२१ प्रयोग क्रिया
२२ समुदान क्रिया ,,
२३ प्रेम क्रिया ,,
२४ द्वेष क्रिया ,,
२५ इरियावहिया ,,

ॐ ह्रीँ णमो किरीयाण—माला २० ।

श्री तपपद नमस्कार १४ ।

१ अनशन तपोयुक्ताय नम ।
२ ऊनोदर तपोयुक्ताय ,,
३ वृत्ति संक्षेप तपोयुक्ताय
४ रस त्याग ,,
५ काय क्लेश ,,
६ संलीनता तपोयुक्तायनम
७ प्रायश्चित ,,
८ विनय ,,
६ वैयावृत्य ,,
१० सज्झाय ,,
११ ध्यान ,,
१२ कायोत्सर्ग ,,

ॐ ह्रीँ णमो तवस्स—२० माला



श्री गोतमपदाराधन १५ ।

१ श्रीगौतम गणधराय नमः ।
२ श्रीअग्निभूत गणधराय नम ।
३ श्रीवायुभूति ,, ,,

४ श्रीव्यक्तस्वामी " "
५ श्रीसुधर्मास्वामी " "
६ श्रीमण्डित स्वामी " "
७ श्रीमौर्यपुत्र स्वामी " "
८ श्रीअकम्पित स्वामी " "
९ श्रीअचलभ्राता " "
१० श्रीमेतार्य स्वामी " "
११ श्रीप्रभास स्वामी " "
१२ चौबीस तीर्थङ्करों के १४५२ गणधरेभ्यो नमः ।

ॐ ह्रीँ णमो गोयमाण—२० माला



श्री जिनपद नमस्कार १६ ।

१ श्रीसीमन्धर जिनेश्वराय नमः ।
२ श्रीयुगमन्धर जिनेश्वराय नमः ।
३ श्रीबाहु जिनेश्वराय नमः ।
४ श्रीसुबाहु जिनेश्वराय नमः ।
५ श्रीसुजात जिनेश्वराय नमः ।
६ श्रीस्वयंप्रभ जिनेश्वराय नमः ।
७ श्रीऋषभानन " "
८ श्रीअनन्तवीर्य " "

९ श्रीधर प्रभु	,,	,,
१० श्रीविशाल	,,	,,
११ श्रीवज्रधर	,,	,,
१२ श्रीचन्द्रानन	,,	,,
१३ श्रीचन्द्रबाहु	,,	,,
१४ श्रीभुजग स्वामी	,,	,,
१५ श्रीईश्वर स्वामी	,,	,,
१६ श्रीनेमि प्रभु	,,	,,
१७ श्रीवीर सेन प्रभु	,,	,,
१८ श्रीमहा सेन प्रभु	,,	,,
१९ श्रीदेवसेन	,,	,,
२० श्रीअजितवीर्य	,,	,,

ॐ ह्रीँ णमो जिणाण–२० माला

श्री चारित्रपद नमस्कार १७।

१ सर्वतः प्राणातिपात विरमणरूपाय चारित्राय नमः	
२ सर्वतः मृषावाद विरमण	,,
३ सर्वत अदत्तादान विरमण	,,
४ सर्वत. मैथुन विरमण	,,
५ सर्वत. परिग्रह विरमण	,,
६ सर्वतः रात्रीभोजन विरमण	,,

७ ईर्यासमिति समिताय
८ भाषा समिति समिताय
९ एषणा समिति समिताय
१० आयाणभडमत्तनिक्खेवणासमिति समिताय
११ पारिष्ठापनिका समिति
१२ मनोगुप्ति गुप्ताय
१३ वचन गुप्ति गुप्ताय
१४ काय गुप्ति गुप्ताय
१५ मनो दण्ड विरताय
१६ वचनदण्ड विरताय
१७ कायदण्ड विरताय

ॐ ह्रीँ णमो चारित्तधराण—

श्री ज्ञान पद नमस्कार

१ श्री आचारांग सूत्राय नमः
२ श्री सूयगडांग
३ श्री ठाणांग
४ श्री समवायांग
५ श्री भगवती
६ श्री ज्ञाताधर्म कथा
७ श्री उपासकदशा

८ श्री अन्तगडदशा सूत्रायनमः	,,	,,
९ श्री अनुत्तरोववाइ	,,	,,
१० श्री प्रश्न व्याकरण	,,	,,
११ श्री विपाक	,,	,,
१२ श्री उववाई	,,	,,
१३ श्री रायपसेणइय	,,	,,
१४ श्री जीवाभिगम	,,	,,
१५ श्री पन्नवणा	,,	,,
१६ श्री जम्बूद्वीप पन्नत्ती	,,	,,
१७ श्री चन्दपन्नत्ती	,,	,,
१८ श्री सूरपन्नत्ती	,,	,,
१९ श्री निरया वलिया	,,	,,
२० श्री पुप्फिका	,,	,,
२१ श्री पुप्फचूलिका	,,	,,
२२ श्री कप्पिका	,,	,,
२३ श्री वह्निदशा	,,	,,
२४ श्री चउसरणपयन्ना	,,	,,
२५ श्री संथारगपयन्ना	,,	,,
२६ श्री भत्तपयन्ना	,,	,,
२७ श्री चदाविजिय	,,	,,
२८ श्री मरणविभत्ति	,,	,,

२९ श्री गणिविज्जा	"	"
३० श्री तदुलवेयालिय	"	"
३१ श्री देवेन्द्रस्तव	"	"
३२ श्री आउर पचक्खाण	"	"
३३ श्री महापचक्खाण	"	"
३४ श्री दशवैकालिक	"	"
३५ श्री उत्तराध्ययन	"	"
३६ श्री आवश्यक मूल	"	"
३७ श्री पिण्ड निर्युक्ति	"	"
३८ श्री व्यवहारच्छेद	"	"
३९ श्री निशीथ	"	"
४० श्री महानिशीथ	"	"
४१ श्री दशाश्रुतस्कध	"	"
४२ श्री जीतकल्प	"	"
४३ श्री पचकल्प	"	"
४४ श्री नदीचूलिका	"	"
४५ श्री अनुयोगद्वार	"	"
४६ स्यादस्तिभगप्ररूपकाय सूत्राय नम.		
४७ स्यान्नास्तिभग	"	"
४८ स्यादस्ति नास्ति भंग	"	"
४९ स्याद् वक्तव्य भग	"	"

५० स्यादस्ति अवक्तव्य भंग स्थापनम ,,
५१ स्यान्नास्ति अवक्तव्य भंग ,, ,,
५२ स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्य भंग ,,

ॐ ह्रीं णमो णाणस्स—२० माला

श्री श्रुतज्ञानपद नमस्कार १६ ।

१ पर्याय श्रुतज्ञानाय नमः ।
२ पर्याय समास श्रुत ,,
३ अक्षर श्रुत ,,
४ अक्षर समास ,,
५ पदश्रुत ,,
६ पदसमासश्रुत ,,
७ संघात श्रुत ,,
८ संघात समास श्रुत ,,
९ प्रतिपत्ति, ,,
१० प्रतिपत्ति समास ,,
११ अनुयोग श्रुत ,,
१२ अनुयोग समास श्रुत ,,
१३ श्रुत ज्ञानाय नमः ।
१४ श्रुतसमास ज्ञानाय नमः ।

१२ क्रोधरहिताय ,,
१३ मानरहिताय ,,
१४ मायारहिताय ,,
१५ लोभ रहिताय ,,
१६ रागाश विरताय ,,
१७ द्वेषाश विरताय ,,
१८ लज्जागुण युक्ताय ,,
१९ दया गुण युक्ताय ,,
२० माध्यस्थ्य गुण ,,
२१ सौम्य गुण ,,
२२ गुणानुराग गुण ,,
२३ अक्षुद्र गुण ,,
२४ सघ प्रभावना गुण
२५ उपास्यगुण ,,
२६ लोकविरुद्ध वर्जन गुण ,,
२७ अक्रूर गुण
२८ पाप भिरु गुण ,,
२९ परात्रचक-विश्वसनीय गुण ,,
३० दाक्षिण्य गुण ,,
३१ अशुभ कथा वर्नन गुण ,,
३२ अनुकूल धार्मिक परिवार युक्ताय

★ रोहिणी तप स्तुति ★

वासुपूज्य जिनेश्वर नन्दा, जया माता आनन्द कन्दा,
सर्व जीवों सुख कन्दा, वासु पूज्य जिनेश्वर वन्दो,
भव भव संचित पाप निकन्दो, आतम गुण आनन्दो ॥ १ ॥
ऋषभादिक चौवीश जिनन्दा, सेवा करे नित्य सकल सुरिन्दा,
मन धरी हर्ष आनन्दा, ताम चरण सेवे मन शुद्धा,
शिव सुख कारण सब ही सिद्धा, निर्मल जैसा दुद्धा ॥२॥
रोहिणी प्रमुख तपस्या सारी, जे भाषित जिनवर गणधारी,
भव्य सकल हितकारी, एहवा आगम जे चित्त धारे,
श्री जिन वाणी पढ़े पढावे, तेह अक्षय सुख पावे ॥३
श्री जिन शासन सानिध्य कारी, धूर थी मंगल दुरित निवारी,
सेवो शुभ आचारी, कल्याण कारण जिननी सेवा,
सुर-नर पूजित शासन देवा, विघ्न हरो नित्य मेवा ॥४॥

★ द्वितीया-स्तुति ★

श्री वासुपूज्यनी पूजिये, जिन चरण तणा फल लीजिये ॥
देवी राणी जय करो, मन वांछित पूरण सुरवरो ॥१
पाँच भरत पाच ऐरवता, पाच महा विदेहमा विचरन्ता ।

त्रण चौबीसी नहोंतेरा, जिन वीश नमों दिन सुख करा ॥२॥
त्रिगड़े बैठा जिन भणों, तिहा वयणे करी वखाण करे ॥
जोजन लगी जिन वाणी विस्तर, बारह पर्षदा बैठी चित्त धरे ३
शासन देवी नाम प्रमा, संघ सकल सोहकरा ॥
वर वाचक मेघ पवन, मुझ मेघचन्द्र हुआ सुख संपदा॥४॥

● रोहिणी-तप-स्तवन ●

शासन देवता स्वामिनी थे, मुझ सानिध्य कीजे ।
भूल्यो अक्षर भक्त भणी, समझाई ने दीजे ॥
मोटो तप रोहिणी तणो थे, तिणरा गुण गाऊ ।
जिन सुख सोहग सपदा थे, वाञ्छित फल पाऊ ॥ १ ॥
दक्षिण भरते अब देश छे, तिहा चंपा नयरी ।
मघवा राजा राज्य करे, तिरो जीत्या वयरी ॥
पाट तणी राणी रूअडी थे, लक्ष्मी थेणे नाम ।
आठ पुत्र हुआ तेहने थे, मन ॥ सुख पाम ॥ २ ॥
रोहिणी नाम पुत्रिका थे, सब को सुखकारी ।
आठों पुत्रों ऊपरे थे, तिणे लागे प्यारी ॥
चढे चन्द्र तणी कला थे, जिम पक्ष अजुवाले ।
तिम त कुवरी थाय मोय, पाचे ध्रवि पाले ॥ ३ ॥

कुंवरी रूप रूअड़ी ए, घर आगण वैठी ।
दीठी राना खेलती ए, मन चिन्ता पैठी ॥
त्रण भवन मिंपे श्रेहवी ए, नहीं वीनी नारी ।
रमा-पद्मा-गौरी गगा, इण आगल हारी ॥ ४ ॥
पुरुष न दीसे कोई इसो ए, जेहन परणावूं ।
आखों आगल शाल वधे, तिण सुख न पाऊं ॥
देश दशना राजवी ए, ततक्षण तेडाव्या ।
सबल सनाई सज करी, नरपति पण आया ॥ ५ ॥
वीतशोक राना तणो ए, छे कुमर सौभागी ।
कन्या केरी आखडी ए, तिया सेती लागी ॥
ऊभा देखे सकल लोक, वढिया कई पाला ।
चित्र शन रे कण्ठ ठवी, कुंवरी वर माला ॥ ६ ॥
देव अने देवागना ए, नपे जय-जयकार ।
रलियायत थयो देखिने ए, सारो समार ॥
वर जोडी ने लोक कह, वर कन्या नो जोडो ।
वीतशोक नो कुमर थयो, शिर ऊपर लाड़ो ॥ ७ ॥
इम विवाह थयो भलो ए, दीधा दान अपार ।
घर आया परणी करी ए, हरख्यो परिवार ॥
वीतशोक राजा पुत्र मणी ए, अपणो पाटन दीधो ।
आपन सयम आदरी ए, जग मे यश लीधो ॥ ८ ॥

❀ ढाल-दूसरी ❀

॥ हवे भवियण र पचमी उज्जमणो-सुणो ए राह ॥

तिण नयरी रे, चित्रसेन राजा थयो।
सुरसमाही र, कटलो काल वही गयो॥
एणे अवसर रे, आठ पुत्र हुआ भला।
चढते पव रे, चन्द्र ऊँमी चढती कला॥ १॥

— त्रोटक —

चढती कलाहव राय बैठो, पास बैठी रोहिणी।
सातमी भूमे राजा सती, करे क्रीड़ा अति घणी॥
आठमो बालक गोद उपर, रङ्ग से राणी लीयो।
पुत्र ने प्रीतम आग आगल, देखता हरखे हीयो॥ २॥

ढाल

एक कामिनी रे, गोखे चढी दृष्टि पड़ी।
तेह फडतीरे रोव रीके बापडी॥
बुढापणे रे, मन गमतो बालक मुओ।
हुँतो एकज रे, तीण अधिक केरो दु ख हुओ॥३॥

त्रोटक

दु ख दुखी देखी रोहिणी, इम कहे प्रीतम भणी ।
ए नारी नाचे अने कूदे, किम कहो माटाधणी ॥
एहवो नाटक आज ताई, मैं कदी देख्यो नहीं ।
मुज्झ ने हमो अने तमाशो, दरवतां आवे मही ॥४॥

ढाल

इण वचने रे, रीमाणो राजा कहे ।
तू तो पापीणी र,परनी पीडा नवी लहे ॥
आ ते दु खिणी रे,पुत्र मुओ तड फड करे. ।
जन धीतेरे, वेदना जाणे जेटली ॥ ५ ॥

त्रोटक

जाणे जे तरे तू वात दु खनी, गर्व घली ग्रामिनी ।
एम कही राना हाथज्झाल्यो तेहना बालक मणी ॥
सातमी भूमि थी तले नाख्यो,तेसे हा हा रव थयो ।
रोहिणी हसती कहे प्रीतम, पुत्र नीचे किम गयो ॥

ढाल

हर्षे राना रे, पुत्र तणे शोके करी ।

थयो मूर्छित रे, रोवे आख भरी भरी ॥
पडतो सुत रे, शासन देव ते आवियो ।
कंचन मय रे, सिंहासने बेसाडीयो ॥७॥

त्रोटक

बेसाडीयो कर जोडी आगे, करे नाटक देवता ।
गोद खिलावे कोई हमावे, पाद पद्म सेवता ॥
उपन्यो भूपति ने अचभो, देखीने कारण किस्यो ।
जो कोई ज्ञानी गुरु पधारे, पूछीये शमय इस्यो ॥ ८ ॥

ढाल

इम चिंतवता रे, चारित्रिया आव्या इसे ।
राना पण रे पहोंच्यो वन्दन ने मिसे, ॥
सुणी देशना रे, पूछे प्रश्न सोहामणो ।
कहो स्वामी रे, पूरव भव बालक तणो ॥ ६ ॥

त्रोटक

बालक तणो तव भूप पूछे कह एणी परे केवली ।
रोहिणी राणीतणो भवान्तर, अने राजानो वली ॥
श्री सुगुरु भाखे पाछले भव, रोहिणी तप आदर्यो ।
तपतणी भगते मातु भगते, तुमें भवसागर तर्यो ॥१०॥

ढाल

कहे राजा रे, किम रोहिणी तप कीजिये।
विधि भाखों रे, जिम तुम पासे लीजिये॥
तब मुनिवर रे, विधि रोहिणीना तप तणी।
इम जपेरे, चित्रसेन राजा भणी ॥ ११ ॥

त्रोटक—

राजा भणी विधि एह जप, चन्द्र रोहिणी आवीये।
उपवास कीजे लाभ लीजे, भली भावना भावीये॥
बारमा जिनवर तणी प्रतिमा, पूजिये मन रंग शु।
इम सात वरसा लगे कीजे, तजी आलस अङ्ग शु ॥१२॥



ढाल—तीसरी

श्री सहेलीए—आम्बो मोरीओ—एराह

तप करीए रोहिणी तणो, भली करिये हो उजमणो एमके।
तप करता पातिक टले, तीया कीजेहो तप सेती प्रेमक।
॥ तप० १॥

देव जुहारी देहरे, जिन आगे हो पूजो शुच अघोर के।
गुणणो वारमा जिनतणो, मना नैवेद्य हो धरिये मधु घोर क।
॥ तप० ॥ २ ॥

केसर चन्दन घसीये, जिन आगे हो आठे मगलीक के।
विधि स पुस्तक पूजिये, तो लहिये हो शिवपुर ठाम के।
॥ तप० ॥ ३ ॥

मेवा कीन मापुनी, जली बीज हो श्रुग मार्गा ग्रा के।
सन्तोषी ने स्वधर्मी मन गौ गे घरी वर्त्ती परराग के।
॥ तप० ॥ ४ ॥

पाटी-पोथी पू जणी, मषी लेखण हो कालमित सु नगीन के।
नवकर वाली वीटागणा, गुरु आगल हो धरिय मताचीन के।
॥ तप० ॥ ५ ॥

चोथु व्रत पाल तिण दिन, इमपाले हो, मन आणी विवेक के।
इण विधि रोहिणी आदरे, ते पामे हो आनन्द अनेक के।
॥ तप० ॥ ६ ॥

ढाल–चौथी

॥ श्री सिद्धचक्र आराधिय-ए राह ॥

इम महिमा रोहिणी, श्री ज्ञानी गुरु प्रकाशे रे।

चित्रसेन ने रोहिणी, रासु पूज्य तीर्थ कर पासे रे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ १ ॥

एणी परे रोहिणी आदरी, ऊपर उमकणो कीधा रे ।

चित्रसेन ने रोहिणी, मन शुद्धे संयम लीधारे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ २ ॥

आठें पुत्रं आदरी दीक्षा वारमा जिन आगे रे ।

वली नाना विध तप आदरे, जिन धर्म तणी मतिजागेरे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ ३ ॥

करी अनशन आराधना, लही कवल शिवपद पायो रे ।

जिन वाणी आणी हैं ये प्रभु चरण चितलायो रे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ ४ ॥

मन मोहन महिमा निलो, मैं स्तवियो शिवपुर गामी रे ।

मन मान्या साहिब तणी, इव पुण्ये सेवा पामी रे ॥

इम महिमा रोहिणी तणी ॥ ५ ॥

कलश

इम गगन इन्दु मुनि चन्द (१७१०) वरसे,

चौथ श्रावण सुदि भली, मैं कह्यो रोहिणी तणी महिमा ।

सुगुरु मुखे जिम सामली,

वासु पूज्य इम थया प्रसन्न अमने, चित्तनी चिन्ता टली ।
श्री सार जिन गुण गावता, हवे सकल मन आशा फली ॥
॥ इति सम्पूर्णम् ॥



❀ रोहिणी तप सज्झाय प्रारभ्यते ❀

तन—मनमाह स्वामी

श्री वासु पूज्य ने नमी स्वामी, कहूँ रोहिणी तप गुण कामी हो ।
धर्मी जन सुणजो, तप करता मंगिदु र जाय,
तप करता रोग न थाय हो ॥ धर्मी० ॥ १ ॥
इन्द्रियना विषयनी राणी ,
तप कर्म पीलणनी घाणी हो ॥ धर्मी० ॥
तप करता निर्मल प्राणी ,
आत्मा होय करल नाणी हो ॥धर्मी०२॥
तप करता आतम गया ,
पावक थई रहे सवीराया रे ॥ धर्मी० ॥
रोग रहित होए काया ,
सरासुर सेवे पाया हो ॥धर्मी०

धीरजवंत जे धर्मकारी ,
रहया कायनी माया निवारी हो ॥ धर्मी० ॥
जेने मंगल माला थनारी ,
ते तप करे निरधारी हो ॥ धर्मी०४ ॥
ए तप रोहिणी नो छे चारू ,
धर्मीजन करे चित्त चारू हो ॥ धर्मी० ॥
सात वरस ऊपर मात मास ,
करे कम क्षयनी आश हो ॥धर्मी०५॥
तप पूरण उजमणो कीजे ,
पूरण फललाहो लीजे हो ॥ धर्मी० ॥
पूजा कीजे बहु युक्ति ,
वासु पूज्यनी भाव भक्ति हो ॥धर्मी०६॥
वासु पूज्य नो बिम्ब भरावो ,
जिनजानो प्रासाद करावो हो ॥धर्मी०॥
केसर चन्दन ने आभरण ,
नैवेद्य करो मन हरण हो ॥धर्मी०७॥
स्वामी वत्सल करो बहु भक्ति ,
पहेरामणी करो निज शक्ति हो ॥ धर्मी० ॥
दीन दुखीओना दुःख कापो ,
जाचक ने वाछित आपोहो ॥ धर्मी०८॥

ज्ञान लगाओ रे बहु रंगे,
अज्ञान नासे गुरु संगे हो ॥ धर्मी० ॥
इत्यादिक उत्तमणो कीने,
मानव भवनों लाहो लीजें हो ॥धर्मी०९॥
पूर्व भवे ए तप कीधो,
रोहिणी राणी सुख लीनो हो ॥ धर्मी० ॥
वासु पूज्य सुत बेटी जाणो,
वासु पूज्य चरित्र वखाणो हो ॥धर्मी० १०॥
ए तप करशे जे भवि भावे
रोग शोकादिक दु खजावे हो ॥ धर्मी० ॥
रुद्धी कीर्ति अनन्ती पामी
होवे अमृत पदनो स्वामी हो ॥धर्मी० ११॥
रोहिणी तप के चैत्यवन्दन स्तुति, स्तवन, सज्झाय-
॥ सम्पूर्णम् ॥



• अब रोहिणी जाप ::

ॐ ह्रँ श्रीँ वासु पूज्य स्वामी सर्वज्ञायनम माला २० जपे। तथा २७ लोगस्स का काउसग्ग करना, रोहिणी तप आराधनार्थ काउसग्ग करना, तथा २७ क्षमाश्रमण देना, इस प्रकार —

१ वासु पूज्य स्वामी का पहला पद रोहिणीजी का पहला पद, वासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञाय नमः

२. वासुपूज्य स्वामी का पहला पद–रोहिणीजी का दूजा पद–वासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः

३ वासुपूज्य स्वामी का पहला पद–रोहिणीजी क तीसरा पद–वासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनम

इस तरह से वासुपूज्य स्वामी का पहेला पद रखना रोहिणीजी का बढाते बढाते २७ नम्बर तक करके पूर्ण करना, २७ स्वस्तिक (साथिया) करना।



अथ—चौदह पूर्व करने की विधि

यह तप चौदश से आराधे, चौदश चौदश पूर्व की पूजन (आराधना) करें। इस प्रकार ७ महीने तक करें यदि ऐसा न हो तो चौदह दिन लगते एकासणा करें। प्रथम अंग आचाराङ्ग सूत्र की स्थापना रखनी, वासक्षेप पूजा करनी, बाद नित्य स्वस्तिक चैत्यवन्दन आगम का करना, पीछे ज्ञान पूजा करनी, क्षमाश्रमण नवकारवाली २० गिनना देववन्दन करना। एक वक्त। बने तो तीनों टाइम वन्दन करना।

१ ॐ ह्रीं श्री उत्पाद पूर्वाय नमः। पद ११

कोडी ५-लक्ष । स्वस्तिक २५-काउसग्ग २५ लोगस्स का करना ।

२ ॐ ह्रीँ श्रीँ आग्रायणी पूर्वायनमः । पद १ कोडी, ६ लक्ष, स्वस्तिक २८-काउसग्ग २८ लोगस्स का करना ।

३ ॐ ह्रीँ श्रीँ वीर्यप्रवाद पूर्वाय नमः । पद ८६ ७० लक्षः । स्वस्तिक २२ काउ० २१ लोगस्स का ।

४ श्री अस्ति प्रवाद पूर्वाय नमः । पद ६० लक्ष स्वस्तिक ३२-काउ० ३२ लोगस्स का ।

५ श्री ज्ञान प्रवाद पूर्वाय नमः । पद १ क्रोड़ म एक न्यून स्वस्तिक १०-काउ० १० लोगस्स का ।

६ श्री सत्य प्रवाद पूर्वाय नमः । पद ६ करोड से कुछ अधिक स्वस्तिक २६-काउ० १, लोगस्स का ।

७ श्री आत्म प्रवाद पूर्वाय नमः । पद ३६ करोड-५० लक्ष । स्वस्तिक २० काउ० २० लोगस्स का ।

८ श्री कर्म प्रवाद पूर्वाय नमः । पद १ करोड ८० लक्ष स्वस्तिक ४४-काउसग्ग ४४ लोगस्स का ।

९ श्री प्रत्याख्यान पूर्वाय नमः । पद ६४ लक्ष स्वस्तिक ३४-काउसग्ग ३४ लोगस्स का ।

१० श्री विद्या प्रवाद पूर्वाय नमः । पद १ कोडी । ५६ लक्ष । स्वस्तिक १८ काउ० १८ लोगस्स का ।

११ श्री कल्याण प्रवाद पूर्वाय नम । पद २६ कोडी स्वस्तिक २६ काउ०२६ लोगस्स का ।

१२ श्री प्राणावाय पूर्वाय नम. । पद १ कोडी ५६ लक्ष स्वस्तिक २७ काउ० २७ लोगस्स का ।

१३ श्री क्रिया विशाल पूर्वाय नम । पद ९कोडी २ स्वस्तिक ४४ काउ० ४४ लोगस्स का ।

१४ श्री लोकबिन्दुसार पूर्वाय नम. । पद १२ कोडी ५० लक्ष । स्वस्तिक ३६काउ०३६ लोगस्स का ।

इति सम्पूर्णम्

नोट—अन्यत्र पद में फर्क आता है। चौदह पूर्वों के ।

चौदह पूर्व का स्तवन

ढाल

तन मेकर जोड़ी तान

जिनवर श्री वर्धमान, चरम तीर्थङ्कर,
प्रह ऊठी प्रणमु मुदा ए ।
श्रुतधर श्री गणधार, सूरि शिरोमणी,

नमता नव निधि सपदा ए ॥ १ ॥
चौदह पूरव नाम, सुणे जू जू ।
वा, वीर जिणन्द भाखीया ए । तहित्र सुगुरु पसाय,
वरणवसु इहा, आगम म जिम उपदिश्या ए ॥ २ ॥
पहिलो पूरव उत्पाद, दूजो आग्रायणी ,
वीर्य प्रवाद तीजो नमू ए, अस्तिनास्ति प्रवाद,
सत्ता जाणिये, नाणप्रवाद पचम गिणू ए ॥ ३ ॥
छट्ठो सत्य प्रवाद, सत्तम आत्मप्रवाद ,
कर्मप्रवाद अट्ठमगिणु ए । प्रत्याख्यानप्रवाद ,
नामें नवम, विद्याप्रवाद दशमों कह्यो ए ॥ ४ ॥
इग्यारम नाम कल्याण, प्राणायाम बारमो,
क्रियाविशाल तेरम भणो ए । बिन्दुसार इण नाम,
चौदह कथा, शास्त्र थकी म सग्रह्या ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल—दूसरी ॥

॥ तर्ज —विमलाचल सिरतिलो ए ॥

उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण ।
षट्भाव प्रकट छेते जिहा, त्रिपदी भाव विज्ञाण ॥ १

सत्र द्रव्य पर्याय तणो, जीव विशेष प्रमाण ।
दूजो पूर्व आग्रायणी, छिन्नु लाख पद जाण ॥ २ ॥
पद लख सित्तर जेहना, सङ्ख्या परगट एह ।
वीर्य प्रवल्ला तीजनी, भाखी तीने तेह ॥ ३ ॥
चौथ पूर्वे जे कह्यो, अस्तिनास्तिप्रवाद ।
पद सङ्ख्या साठ लाखनी, सप्त भंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥
ज्ञानप्रवाद पद पांचमो, सूत्र आपणो जोड ।
मत्यादिक पण भेद सु, पद सङ्ख्या इक कोड ॥ ५ ॥
सत्यप्रवाद छट्ठो कहूं, भाखु सत्य स्वरूप ।
सङ्ख्या पद इक कोडनी, भाखी अगम अनूप ॥ ६ ॥
नित्यानित्य पणो इहां, आतम द्रव्य सुभाव ।
छत्रीस पद कोड जहना, पूरव आतम भाव ॥ ७ ॥
कर्मप्रवाद तणा हिव, प्रकट पणे अधिकार ।
लाख असी पद जहना, कोड़ा इग निरधार ॥ ८ ॥
नवमों पूर्व कहूं हिव, नामें प्रत्याख्यान ।
लाख चौराशी जेहना, पद सङ्ख्या रित्त आन ॥ ९ ॥
अतिशय गुण सयुत मणी, साधन साध्य निदान ।
विद्या अनूपम सात से, कोडी दश लाख जाण ॥ १० ॥
कल्याणनाम इग्यारमो, छव्वीस कोड प्रमाण ।
ज्योतिष शास्त्र विचारणा, चौविह दव कल्याण ॥ ११ ॥
प्राणायु पद बारमो, छप्पन लख इक कोड ।

प्राण निरोधन ने क्रिया, शास्त्रे भाख्यो नोड ॥ १२ ॥
कायिस्थानिक जे क्रिया, छन्द क्रियामु विशाल ।
पद सख्या नव कोड़ नी, तरमो क्रिया विशाल ॥ १३ ॥
लोकसार बिन्दु चौदमो, नाम अर्थ निहाल ।
पद सख्या इक कोडनी, लाग पचीस सभाल ॥ १४ ॥
लोक प्रत्यय दशमण भणी, सख्या गन परिमाण ।
सोल सहस अन्तीस से, उपर तख्यामी जाण ॥ १५ ॥
पूरब सख्या एक ही, गुण माला थी दखु ।
आगे पुणतम मोघज्या नारी देश विशेष ॥ १६ ॥

इति



ढाल—तसरी

सर्ज —वीर जिणेसर इम उपदिशे

सूत्रे गू थ गणधरा, अरथे श्री अरिहन्त भाखेरे ।
ते श्रुत नमू सदा, पाप तिमिर निम नासेरे ॥ १ ॥
वाणीरे वीर जिणन्दनी, सुणनो चित हित आणीरे ।
तत्व रमणता अनुसरे, सपूरण गुण खाणी रे ॥ वाणी० ॥ २ ॥
विषय कषाय वर्जीनरी, ज्ञान भगती उर धारीरे ।

विधि सयुत जिन मन्दिर, प्रभु मुख पास जुहारी रे।
॥ वाणी०॥ ३ ॥
तप नप मयम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे।
सद्गुरु चरण नमी करी, सभर जोग प्रधानो र।वाणी०। ४।
अक्षत लेइ ऊजला गहूँली सुन्दर कीजे रे।
नाणदसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजे र।वाणी०। ५।
चौदह पूर्व ग्रत इण पर, सुगुरु मनोगे लई रे।
विधि सु पुस्तक पूजिये, चित्त अति आदर देई रे।वाणी०।६।
इम तप सपूरण थयो, उज्जमणो हिव कीजे रे।
घर सारू धन खरचन, नरभव लाहो लीन र।वाणी०।७।
पूठा परत नीटागणा पाव नाम प्रमाणो रे।
नवकरवाली रोथली, लेखण ठवणो आणो र।वाणी०।८।
देहर देव जुहारी ने, आरती मगल कीजेरे।
स्नात्र पूजा रली साचवी, तत्व सुधारस पीजेर।वाणी०।९।
इण पर तप आराधता, दुरगति कारण छेदे र।
चौदहरज्जु शिरोमणि, नाव अनय गति वेदे रे।
॥ वाणी० ॥ १० ॥
तप आराधन विध भणी, आगम वचन जोई रे।
भविषण पिण तुमे आदरो, ज्या भव भ्रमण न होई रे।
॥ वाणी० ॥११ ॥

कलश

इम सयल सुखकर गच्छ खरतर तप रोहिणी विधि भाव ए ।
सौभाग्य सूरि मुनिन्द्र इण पर कयो पूर्व वृत्तान्त ए ॥
सवत् अठारह वरस छित्र नयर श्री बालूचरे ।
ए स्तवन भणता श्रवण सुणता मयरु मन वाञ्छित फले ।
॥ १२ ॥ इति, ॥

शुभम् भूयात् शुभं भूयात् भूयात् कल्याण मुत्तमम्

परम पूज्य श्रीमान प० प्र० विद्वद्वर्य श्रीजिन कविन्द्रसागर सूरीश्वर की गहूली स्वर्गधाम को पधारे की

ज्ञान दिवाकर नयन उजारा, कवीन्द्र सूरीश्वर देवरे ।
सूना गाम भ अस्त हमारा हुए सूरीश्वर देवरे ॥टेर॥
कहां गये सूरीश्वर हमरे, करके हमें निराधार रे ।
कहां जावें किस से ही पुकारें, छाय रहा अंधकार रे ॥
॥ १ ॥ ज्ञान० ॥
दिव्य ज्ञान दिवाकर गुरुवर, कौन करेगा भव पार रे ।
क्या जाना क्या हो गया गुरुवर, विरह व्यथा है अपार रे ॥
॥ २ ॥ ज्ञान० ॥

गच्छनायक शिरोमणि गुरुवर, दो दर्शन एकवार रे।
भव्यजनों के तारक गुरु वर, करो न कुछ भी विचार रे॥
॥ ३ ॥ ज्ञान० ॥
अन्तिम शिक्षा सुनलो मुनिवर, कह कर छोड़ा संसार रे।
गुरुवर गुरुवर कहते मुनिवर, धरणी ढले तत्कार रे॥
॥ ४ ॥ ज्ञान० ॥
कौन करावे पूजा प्रतिष्ठा, कौन देगा शिक्षा सार रे।
हैं हैं गजब किया सूरीश्वर, संघ धरे दुख अपार रे
॥ ५ ॥ ज्ञान० ॥
संस्था युगल स्थापक सूरीश्वर, नयन भर जल धार रे।
तुम थे दिव्य यतीन्द्र सूरीश्वर, कलिकुल किरीट शृंगार रे॥
॥ ६ ॥ ज्ञान० ॥
द्विसहस्र अष्टादश में प्रभु, फाल्गुन शुक्ला मध्यरात रे।
स्वर्ग सिधाया सूरीश्वर प्रभु, भक्त करे कल्पान्त रे॥
॥ ७ ॥ ज्ञान० ॥
दर्शन देओ प्रमुदित कर दो, सहाय करो गुरुदेव रे।
बीर वचनामृत उर में भरदो, रत्नाकर गुरुदेव रे॥
॥ ८ ॥ ज्ञान० ॥
नितप्रति आप से अर्ज सूरीश्वर, कर देना भवपार रे।
माला "प्रमोद" कहे सुनना सूरीश्वर, कर दो बेड़ा पार रे॥
॥ ९ ॥ ज्ञान ॥ ॥ इति ॥

पूज्य गणाधीश श्रीमान् [illegible] हेमेन्द्रसागरजी म० सा० [illegible]

गणाधीश गुरुदेव तुमको लाखों प्रणाम [illegible]

[illegible]

सूरीश्वर के पटधर गुरुवर, [illegible]
चारित्र गुण मणि खान ॥ [illegible]
पंच महाव्रत धारक गुरुवर, [illegible]
रत्नत्रयी सुख खाण ॥ [illegible]
शान्त मूर्ति तुमरी है गुरुवर [illegible]
हो शिव मन्दिर सोपान ॥ [illegible]
चार कषाय के रोधक गुरुवर, [illegible] गुरुवर
पंच समिति गुणवान ॥ [illegible]
ज्ञानी ध्यानी तुम हो गुरुवर [illegible] गुरुवर
हो रत्नों की खाण ॥ [illegible]
नाम आपका प्यारा गुरुवर, [illegible] गुरुवर,
रखा निज में नाम [illegible]
आपका गुण हम गावें गुरुवर, [illegible] गुरुवर
रखकर [illegible] ॥ इति ॥

परम पूज्य व्याख्यान वाचस्पति प० प्र० शास्त्र विशारद
श्रीमान् क्रान्तिसागरजी म० सा० की गहूँली।

धन्य २ परम पूज्य भगवान(गुरुदेव)भवोदधि पार लघाने वाले
भवोदधि पार लंघाने वाले हमको शरण म रखने वाले ॥टेर॥

आप गुण रत्नों की खान, रखना हमरा भी तो ध्यान।
हम हैं निरा बाल अज्ञान, कृपार्णव नाम धराने वाले
॥ धन्य। १ ॥

आप शासन क सरताज, रखिये भक्त जनों की लाज।
करती छक शुक्र नन्दन आज, ज्ञानार्णव नाम धराने वाले
॥ धन्य०। २ ॥

आप की महिमा अपरपार, गुण गावें सब नर नार।
कर दीजिये हमको पार, भवदरिया से तराने वाले
॥ धन्य। ३ ॥

आपका नाम है जगदाधार, क्रान्ति शान्ति फैली संसार।
क्रान्ति सागर सा नाम में सार, विश्व म क्रान्ति फैलाने वाले
॥ धन्य। ४ ॥

यह नगरी धन्य है आज, पधारे मेरे गुरुवर राज।
सारी जग गई भक्त समाज, महोत्सव की शान रचाने वाले
हा हा उज्ज्वल कीर्ति फैलाने वाले ॥ धन्य ॥ ५ ॥

गुरु आप हो दीन दयाल करना भक्तों की प्रतिपाल।

मन श्रमण की यह दुर्दशा को मगा दो जल्दी से ,
शुद्ध केउथ (श्रद्धा) को जल्दी स्वीकार करो ॥गुरु०॥३॥
सप्तविंशति गुण के धारी, दोष बयालीश टारी हो ।
मद मोह माया को ही मारी धर्म ध्वज के धारी हो ,
ऐसे परम पूज्य से वुद्ध प्राप्त करो ॥ गुरु० ॥ ४ ॥
धन्य गुरुवर आपके हा रत्न अमोला पा लिया ,
धन्य हमरा भाग्य जो, कान्ति गुरुवर पा लिया ।
अब तो भाग्य सितारा चमकाया करो ॥ गुरु०॥ ५ ॥
गुणगान करती प्रार्थना करती, नित्य दर्शन दीजिये ।
उपयोगे रमती ध्यान धरती की पूर्ण आशा कीजिये ॥
भगवन् कृपा की नजर वर्षाया करो ॥ गुरु० ॥ ६ ॥
मोद पाकर गुणगान करती, सेविका निज आप से ।
रखलो चरण के शरण म इतनी गुजारिश आपसे ।
वही "प्रमोद" को भव पार करो ॥ गुरु० ॥ ७ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

शुभम् भूयात् सुखंभूयात् भूयात् कल्याणामुत्तमम्

ॐ शान्ति.

शान्ति शान्ति.

